जैन प्रकाश

सितम्बर 2017 द्वितीय पक्ष पृष्ठः 52 मूल्यः 7:00 रुपये

भण्डारी प. पू. श्री पदम चंद्र जी म. जन्म शताब्दी विशेषांक

भण्डारी पू. श्री पदम् चन्द्र जी म. के जन्म शताब्दी वर्ष
के अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक वंदन-नमन्

परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों को हार्दिक वंदन-नमन्

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ

शिवाचार्य समवशरण इंदौर में आध्यात्मिक श्रावक संस्कार शिविर के अवसर पर मंचासीन आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म., पू. आचार्य 108 श्री विशुद्ध सागरजी म., युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. एवं अन्य संतवृंद।

शिवाचार्य समवशरण इंदौर में संवत्सरी महापर्व के पावन प्रसंग पर आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म. उपस्थित विशाल जनसमूह को प्रवचन फरमाते हुए।

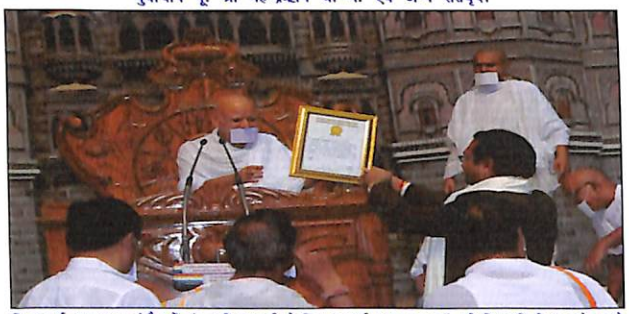

शिवाचार्य समवशरण इंदौर में संवत्सरी महापर्व के दिन आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म. को सबसे बड़ा 'संवत्सरी प्रतिक्रमण समारोह' आयोजित करने पर गोल्डल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड प्रदान करते हुए आर्गेनाईज़र डॉ. मनीषजी विश्नोई ।

शिवाचार्य समवशरण इंदौर में संवत्सरी महापर्व के पावन अवसर पर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड के आर्गेनाईज़र डॉ. मनीषजी विश्नोई को सम्मानित करते हुए निवर्तमान रा. अध्यक्ष श्री नेमनाथजी जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशजी भण्डारी जैन एवं अन्य।

बिबवेवाड़ी जैन स्थानक में पू. श्री प्रीतिसुधा जी म., पू. श्री मधुस्मिता जी म. आदि सतीवृंद के दर्शन करने पहुंचे श्री केसरीमलजी बुरड़ जैन, श्री बालसाहेबजी चोरड़िया जैन, श्री अशोककुमारजी पगारिया जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, सुनीलजी चोपड़ा जैन, श्री पोपटलालजी ओस्तवाल जैन, श्री माणिकजी दुग्गड़ जैन आदि कार्यकारिणी सदस्यगण।

चंडीगढ़ में आचार्य सम्राट पू. श्री डॉ. शिवमुनि जी म. द्वारा पू. श्री. सौरभमुनि जी म. को श्रमण संघ गौरव की आदर की चादर की अनुमोदन करते हुए रा. अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, रा. प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, रा. का. सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, महिला अध्यक्षा सौ. रुचिराजी सुराणा जैन, सौ. कल्पनाजी धारीवाल जैन एवं अन्य।

पू. श्री प्रतिभाश्री जी म. की सुखसाता पूछते रा. अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री अशोककुमारजी पगारिया जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, श्री सागरजी सांखला जैन, श्री नेमीचंदजी सोलंकी जैन, श्री नितिनजी चोपड़ा जैन, श्री प्रकाशजी बोरा जैन तथा विलासजी पगारिया जैन आदि।

चंडीगढ़ में पू. श्री. सौरभमुनि जी म. के सान्निध्य में गुरु प्रेम चंद जी म. की 117वी जन्म जयंती के अवसर पर घर घर से अन्नदान किस प्रकार संग्रहित किया जाये इस योजना का अनावरण करते हुये रा. अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, रा. प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, रा. का. सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, महिला अध्यक्षा सौ. रुचिराजी सुराणा जैन, सौ. कल्पनाजी धारीवाल जैन, मंजुजी दर्डा जैन श्रीसंघ प्रधान सुभाषजी जैन एवं महामंत्री सुधीरजी जैन एवं अन्य।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशेः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 अंक-18 सितम्बर 2017 द्वितीय पक्ष 23-24 सितम्बर मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन
सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली
जैन भवन
12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
वंदन नमन बारंबार	जैन कॉन्फ्रेंस के सदस्य गण	11
आत्म ध्यान से जैन	आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी	12
प्रवर्तक परम पू. भण्डारी...	संत-सतीवृंदों के उद्‌गार	13
एक महान त्यागी...	पू. श्री पदम मुनि जी	21
शताब्दी पुरुष का श्रद्धार्चन...	पू. श्री वरुण मुनि जी म.	22
शिवाचार्य भगवन को नमन्	पू. श्री रमणीक मुनि जी म.	24
शिव भगवन जिनमें नजर...	पू. श्री निशांत मुनि जी म.	25
युग प्रधान आचार्य सम्राट...	डॉ. शिवा जी म.	26
शिव सुखों के मानसरोवर...	पू. श्री अनुपमा म.	27
देश में अहिंसा और शांति...	नेमनाथ जैन	28
आचार्यश्री का इंदौर वर्षावास...	रमेश भण्डारी	29
GST क्या है...	डॉ. अशोककुमार पगारिया सीए	32
परिवार का मतलब क्या है?	आनंद नवकार परिवार	33
आचार्य श्रीजी	देश बंधु हिंगड जैन	34
आगम स्वाध्याय की महिमा	डॉ. दिलीप धींग	35
हत्यारा या मोक्षगामी	शांतीलाल नागौरी	37
रत्नललाम नगरी...	एस.सी. कटारिया	39
सजगता से मन की स्वस्थता	अशोक खिंवसरा	40
ज्ञमण संघ दिवाकर...	राजेश जैन	41
महापुरुषों के जीवन से...	पुष्पा गोखरु	43
ध्यान	दिपाली सुमतिलाल	44
श्री आनंद शिव महेन्द्र...	शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन	45
समाचार प्रकाश		47

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः
- श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
- श्री मूलचंद जी महाराज
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
- श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
- श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः
- श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
- श्री सुमन मुनि जी महाराज
- श्री रतन मुनि जी महाराज
- श्री मदन मुनि जी महाराज
- श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
- डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः
- श्री शिरीष मुनि जी महाराज (शिवाचार्य मुख्य सचिव)
- श्री आशीष मुनि जी महाराज
- श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः
- श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
- श्री सहज मुनि जी महाराज
- श्री सुकन मुनि जी महाराज
- श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
- श्री तारक ऋषि जी महाराज
- श्री रमणीक मुनि जी महाराज
- श्री दिनेश मुनि जी महाराज
- श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
- श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः
- श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
- श्री चंदना जी महाराज
- श्री सुधा जी महाराज
- श्री सुप्रभा जी महाराज
- श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :					
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423962818 09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल बाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. बोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374, 7023907574	09414167574	
श्री बालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री वी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला		7027131008	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री : **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) **श्री रिखबलाल सांखला जैन,** मुंबई				09814699393 09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा : अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09823955515 09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा : अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत			09423966963	09820004079 09426115241	
जीवन प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09822596781 09833866852	
जीव दया योजना : अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				09879550981 08980018801	
मानव सेवा योजना : अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731 0731	2531066 28753681	2970666 2780090, 2785232	07773866000 09425062147	531066
ज्ञान प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080 080	22383557 41221890	41223853	09448238429	09844058123
वैय्यावच्च समिति : अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे	0253	2575799		09422944800 09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

ज्ञान के भंडार : परम पूज्य श्री पदमचंद्र जी म. ' भण्डारी ' को शत-शत नमन!

- डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयो एवं बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र!

अभी अभी पर्युषण महापर्व सप्ताह सम्पन्न हुआ। चातुर्मास का दूसरा सत्र शुरू हुआ। संवत्सरी के पश्चात कई लोगों स्थानक में जाना बन्द होता है, इसलिए कहावत ही कही जाती है- **'हो गया संवत्सरी का पारणा और छूट गया स्थानक का दारणा'।।**

लेकिन हमें ऐसा नहीं करना है, चातुर्मास के दूसरे दो महीनों में नियमित रुप से गुरु भगवंतों की जिनवाणी, अमृतवाणी हमें सुननी है। बहुत सुंदर और मौलिक विचार होते हैं, संतों की वाणी में। हमें पूरा-पूरा लाभ लेना है। मैं केवल आपके लिए नहीं कहता हूं, मैं खुद मेरे गांव में प.पू. श्री विपुलदर्शना जी म. आदि ठाणा-6 का चातुर्मास चल रहा है, जब भी मैं पुणे में होता हूँ, नियमित रुप से प्रार्थना एवं प्रवचन में उपस्थित रहता हूँ और जिनवाणी श्रवण करने का लाभ मुझे मिलता है। आपसे भी यही उम्मीद रखते हुए पुनः **'मिच्छामि दुक्कडम्''** कहते हुए आपकी सुखसाता पूछते हुए शुभकामना देता हूँ।

इस माह 29 सितम्बर 2017 को उत्तर भारत प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी पू. श्री पदमचन्द्र जी म. की जन्म शताब्दी वर्ष के इस शुभ अवसर पर आपश्री को वंदन, नमन एवं अभिवादन करते हैं। गुरुदेव का जन्म हरियाणा प्रांत के छोटे से गांव हलालपुर में विजयादशवीं के दिन हुआ। सन 1924 में उन्होंने जैन आर्हती दीक्षा स्वीकार कर ली। गुरुदेव पू. श्री पदमचन्द्र जी भण्डारी ने उनके शिष्योत्तम पू. श्री अमरमुनि जी म. ने साथ मिलकर संस्कार एवं ज्ञान की गंगा बहाने हेतु साहित्य का निर्माण किया। आपकी यह मनोकामना थी कि जिनवाणी यानि जैन आगम देश ही नहीं बल्कि विश्व के कोने-कोने में फैले, लोगों से पढ़ा जाये। आज विदेशों में अमेरिका, इंग्लैड़, जर्मन जैसे देशों में सचित्र जैन आगम बड़ी लगन से और श्रद्धा से भक्तगण पढ़ते हैं और पढ़ाते भी हैं।

श्रद्धेय गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्तक इस प्रतिष्ठा एवं सम्मान के पद पर लगातार 17 वर्ष अधिष्ठित रहे। उनके कार्यकाल में उत्तर भारत में श्रमण संघ का विकास हुआ। श्रमण संघ मजूबत हुआ। आप जैसे प्रतिभावान एवं तपस्वी संत श्रमण संघ के लिए, जैन समाज के लिए व भारतवर्ष के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि साबित हुई। आपको जन्म दिवस पर, शताब्दी महोत्सव पर हमारा लख-लख वंदन एवं अभिवादन।

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि अगले माह यानि 5 अक्टूबर 2017 को हमारे सबके श्रद्धेय श्रमण संघ की शान युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. का जन्म दिवस है। उन्होंने मिठी वाणी से ओजस्वी एवं विद्वतापूर्ण प्रवचनों से अपने भक्तों का युवा साथियों का मन जीत लिया है। उनके जन्म दिन के शुभ-अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस की युवा शाखा की ओर से तेजपुँज युवा सम्मेलन का आयोजन इंदौर में किया जा रहा है। सभी प्रमुख कार्यकर्त्ता एवं युवा साथियों को करबद्ध निवेदन है कि इस सम्मेलन पर पधार कर एक ऐतिहासिक आध्यात्मिक एवं सद्विचारों से परिपूर्ण सम्मेलन के साक्षीदार ही नहीं सांझीदार बनें। अगले माह अक्टूबर का प्रथम पक्ष का जैन प्रकाश पू. श्री युवाचार्य म. पर विशेषांक

प्रकाशित हो रहा है, आप सभी से विनती है युवाचार्य जी के विशेषांक हेतु अधिक से अधिक अपने विचार-लेख भेजने की कृपा करें।

दूसरी महत्त्वपूर्ण बात छात्र-छात्राओं के लिये है जैन मायनॉरिटी स्कॉलरशिप की आवेदन स्वीकृति की तारीख बढ़ाकर 30 सितम्बर की गयी है। आप ध्यान रखे, समय पर आपका आवेदन-पत्र भेजने हेतु सजग रहें।

इस पखवाड़े में **पू. श्री पदम चंद्र भण्डारी म. जन्म जयंती/शताब्दी वर्ष, उपाध्याय पू. श्री पुष्कर मुनि जी म. जन्म दिवस, उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. जन्म दिवस, प्रवर्तक पू. श्री रमेश मुनि जी म. का जन्म दिवस है। जैन कान्फ्रेंस परिवार की ओर से सभी पूज्य गुरु भगवंतों को हार्दिक वंदन, अभिनंदन एवम् नमन करता हूँ।**

गुरु ही जीवन का आधार है,
गुरु बिना जिंदगी मझधार में है,
गुरु ही लगावे, जीन की नैय्या पार।
गुरु के संग से हो जायेगा बेड़ा पार।।

✧✧

विशेष ध्यान शिविर

जय जिनेन्द्र।

युगप्रधान, ध्यानयोगी आचार्य सम्राट प.पू.डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के हीरक जयंती वर्षावास में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण व सदस्यों के लिए **'चार दिवसीय गंभीर ध्यान साधना शिविर'** बुधवार, 11 अक्टूबर, 17 से शनिवार,14 अक्टूबर,17 तक शिवाचार्य समवशरण, अभय प्रशाल, इंदौर में आचार्य भगवन, युवाचार्य श्रीजी, प्रवर्तक श्रीजी आदि संत-सतियों के सान्निध्य में आयोजित किया है। जैन कॉन्फ्रेंस इंदौर में आयोजित 'वार्षिक साधारण सभा' में इसका प्रस्ताव पारित किया गया है । सभी पदाधिकारियों को शिविर में आना जरुरी है। मंगलवार,10 अक्टूबर 17 रात को आपको परिवार सहित इंदौर, मध्य प्रदेश में पधारना है । शिविर 11 को सुबह 6 बजे शुरु होगा ।

शिविर में श्वेत (सफेद) वस्त्र व महिलाओं के लिए चुंदडी पहनना अनिवार्य है । व्यवस्था के लिए अपने नाम व मोबाइल नंबर एस.एम.एस. द्वारा या व्यक्तिगत फोन करके लिखवाये। लिमिटेड सीट्स होने की वजह से **'पहले आओ-पहले पाओ'** की नीति अपनाई गई है । शिविर में पधारने के लिए 500/- रुपये शुल्क रखा है व 30 सितंबर,17 तक अपने नाम लिखवाना अनिवार्य है।

संपर्कः-

डॉ. अशोक पगारिया जैन 094220 36831 शशिकुमार (पिंटू) कर्णावट जैन 098239 55515 रुचिरा सुराणा, 094239 66963 बालचंदजी खरवड़ जैन 098216 68548, पारस मोदी जैन 098200 60530

निवेदक : जैन कॉन्फ्रेंस परिवार

GOODS AND SERVICE TAX RETURN DATES

	MONTH	RETURN TYPE	DATE
1	JULY	Form 3B	20/08/2017
		Tax Payment	20/08/2017
		GSTR- 1	10/10/2017
		GSTR- 2	31/10/2017
2	AUGUST	Form 3B	20/09/2017
		Tax Payment	20/09/2017
		GSTR- 1	05/10/2017
		GSTR- 2	10/10/2017
3	SEPTEMBER	Form 3B	20/10/2017
		Tax Payment	20/10/2017
		GSTR- 1	10/10/2017
		GSTR- 2	15/10/2017
4	Input Service Distributors 13th of every succeeding month.		
5	Transition form to be filed before 30th Sept 2017.		
6	Composition sceme returns 15th of following quarter.		
7	Annual return 31st December of Financial year.		

अध्यक्षीय उद्गार

मेरी दृष्टि में उत्तर भारतीय प्रवर्तक भंडारी पू. श्री पद्मचन्द जी म.

– **मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम सम्मनीय बन्धुओ,

सादर जय जिनेन्द्र!

जिस धरा पर महापुरुष जन्म लेते है वह धरा इतिहास में अपना स्वर्णिम स्थान सुनिश्चित कर लेती है। भारतवर्ष एक ऐसी ही पुण्य धरा है जहां के कण-कण में संतों की साधना की सुवास विद्यमान है। इसी संत परमपरा ने इस धरा को विशिष्ट बनाया है।

बचपन से एक जिज्ञासा थी कि भगवान के रुप में किसी महान तेजस्वी परम आत्मा के साक्षात् दर्शन करने का सौभाग्य मिले, गुरुदेव की कृपा से मेरी यह जिज्ञासा भी पूर्ण हो गई। एक ऐसी महान आत्मा के दर्शन करके मेरी आंखे धन्य हो गई थी। ऐसे परम तपस्वी का जन्म हलालपुर गांव के सेठ गणेशीलाल जी के यहां माता सुख देवी जी की कुक्षी से विक्रम संवत् 1974 में सन् 1917 में आश्विन शुक्ला दशमी जिसे हम लौकिक भाषा में विजय दशमी कहते हैं इस दिन हुआ था। नामकरण में बालक का नाम देशराज रखा गया अर्थात् सारे देश पर राज करे।

उनको शिष्य बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ पू. श्री हेमचंद जी म. को। उन्होंने उनको जानने के लिए नाम दिया पू. श्री पद्मचंद जी म.। दीक्षा के पश्चात **'पू. श्री पद्मचंद जी म.'** स्वाध्याय में तल्लीन हो गए। सरलता और सुबोधता तथा सेवा ही उनके जीवन का अभिन्न लक्ष्य बन गया था। **उन्होंने प्रथम आचार्य सम्राट् पू. श्री आत्माराम जी म. की पुस्तकालय की बागड़ोर अपने हाथ में ले ली तथा आपने गुरु चरणों में रहकर सरस्वती के भंडारे से सारे मोती बांध लिए। गुरुदेव के पास ज्ञान का इतना भंडारा एकत्रित हो गया कि पू. श्री आत्माराम जी म. ने उन्हें 'भंडारी' के नाम का संबोधन दिया और 'भंडारी श्री पद्मचंद जी म.' के नाम से पुकारे जाने लगे।**

अम्बाला शहर में गुरुदेव को प्रवर्तक पद से विभूषित किया गया। प्रवर्तक पद प्राप्त करके आप महत्वपूर्ण कार्य में लगे रहे। गुरुदेव का जीवन सदैव परोपकार में रत रहा और संतों की जीवन सम्पति तो होती ही **'तिण्णाणं तारयाणं'** है। गुरुदेव ने इस कथन को श्रेष्ठ कर दिखाया। गुरुदेव ने अनेक आत्माओं को इस संसार के चक्रव्यूह से बाहर निकाला है और उन्हें कल्याण के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है, जिससे कईजन लाभान्वित हुए हैं।

हम सब अपने पर गर्व करते हैं कि हमें गुरुदेव जैसे प्रवर्तक मिले। हम सब उन्हें मिलकर शत्-शत् नमन करते हैं। गुरुदेव की जन्म शताब्दी महोत्सव के पावन प्रसंग पर मैं जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक-हार्दिक नमन करता हूँ, वंदन करता हूँ।

यहाँ पर मैं अपने मन के कुछ और उद्गार व्यक्त करना चाहता हूँ कि मेहनत करते हुए सफलता

प्राप्त करना हरेक व्यक्ति को पसन्द हैं, बिना मेहनत के सफलता मिल पाना भी असंभव होता है, इसलिए हम सभी जानते हैं कि मेहनत करना आवश्यक है, तभी सफलता मिलेगी, अन्यथा नहीं।

मैं हमारे प्रिय बन्धुओं, कार्यकर्ताओं, सहयोगियों का आभार प्रकट करता हूँ, जो अपने दायित्वों का निर्बाध रूप से करते आ रहे हैं। हमने अपने कार्यकाल में कुछ ऐसे लक्ष्यों को हाथ में लिया, जोकि धरातल से जुड़े हुए हैं। ऐसे कार्यों को पार लगाने में अत्यधिक लगन की आवश्यकता होती हैं और जो लगन के पक्के होते हैं वे ऐसे कार्य कर जाते हैं।

ऐसे ही हमारे एक सहयोगी बन्धु श्रीमान् लादुलाल जी बाफना जैन, मुंबई निवासी ने कुछ समय पहले जैन कॉन्फ्रेंस की महत्वपूर्ण योजना जीवन प्रकाश योजना के राष्ट्रीय मंत्री पद का भार संभाला। उन्होंने यह जिम्मेदारी वाला पद संभालते ही हमारे समाज के ऐसे जरुरतमंद छात्र-छात्राओं को अधिक से अधिक संख्या में और तीव्रता से छात्रवृत्ति प्रदान की है, वहीं इस योजना के माध्यम से ही समाज के जरुरतमंदों को मैडिकल के माध्यम से सहायता प्रदान कर रहे हैं, जो एक प्रशंसनीय कार्य है। वे इस योजना के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा छात्र-छात्राओं को लाभान्वित करने के लिए हमेशा ही उत्साह से परिपूर्ण दिखाई देते हैं। ऐसे कार्यकर्तागण, सहयोगी बन्धु यदि हमारे साथ जुड़े हैं तो निश्चिंत ही जैन कॉन्फ्रेंस का नाम सदैव ही स्वर्ण अक्षरों में लिखा रहेगा। मैं श्रीमान् लादुलाल जी बाफना जैन का उनके सहयोग के लिए तहे दिल से अभिनंदन करता हूँ। वे इसी प्रकार तन-मन-धन से समाज की सेवा करते रहें, वीर प्रभु उनके इस अद्भुत सहयोग के लिए उन्हें आगे बढ़ते रहने में सहयता करें। मैं आशा करता हूँ कि उनके इस प्रशंसनीय कार्य से प्रेरणा लेकर हमारे अन्य सहयोगीगण भी अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

हमारे साथ बहुत सारे वरिष्ठ सहयोगी भी जुड़े हुए हैं, जो समय-समय पर अपना मार्गदर्शन, सहयोग और सुझाव हमें देते रहते है, जिसके लिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ। मानव सेवा योजना का कार्य भी बहुत अच्छा चल रहा है, जिसके माध्यम से समाज की जरुरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन एवं विधवा बहनों को पेंशन प्रदान की जा रही है। श्री महेश जी डाकोलिया जैन इस कार्य के प्रति उत्साहित है और लल्लनीता से इस कार्य में अपना सहयोग भलीभांति प्रदान कर रहे हैं।

जैन कॉन्फ्रेंस की युवा शाखा देशभर के युवा बन्धुओं को साथ लेकर बहुत अच्छे-अच्छे सामाज हित कार्य करती आ रही हैं। चाहे वह ब्लड़ डोनेशन हो, वृक्षारोपण हो अथवा युवाओं को उचित मार्गदर्शन के लिए साधु-संतों की सेवा के कार्य हो। युवा शाखा बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

महिला शाखा स्वयं में अपना एक आदर्श समाज के समक्ष प्रस्तुत कर रही है। महिला स्वावलंबन एवं नारी शक्ति को और मजबूती प्रदान कराना । महिलाओं को जागरूक बनाने जैसे प्रकल्प महिला शाखा द्वारा देशभर में किए जा रहे हैं। मैं हमारी महिला बहनों का उत्साहवर्धन करते हुए कहना चाहूंगा कि वे इसी प्रकार आगे बढ़ते रहें, हमारा मार्गदर्शन एवं सहयोग उनको मिलता रहेगा।

अपने इन उद्गारों को विराम देते हुए मैं आशा करता हूँ कि आप सभी इसी प्रकार अपना सहयोग हमें प्रदान करते रहेंगे, इन्हीं आशाओं और शुभकामनाओं के साथ सादर जय जिनेन्द्र!

वंदन नमन बारंबार

सरस्वती पुत्र, ज्ञान के अक्षय भण्डार

भण्डारी पूज्य श्री पदमचंद जी महाराज

जन्म शताब्दी वर्ष

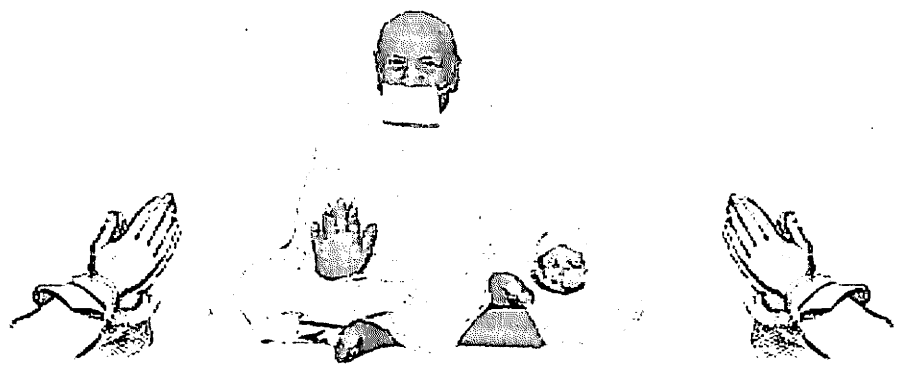

::: विनीत :::

मोहनलाल चोपड़ा जैन

राष्ट्रीय अध्यक्ष

कांतिलाल एच. जैन	अविनाश चोरड़िया जैन	रामकुमार जैन	चंदनमल चोरड़िया जैन
प्रमुख मार्गदर्शक	प्रमुख मार्गदर्शक	प्रमुख मार्गदर्शक	प्रमुख मार्गदर्शक

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - विलास लोढ़ा जैन (वरिष्ठ), बालचंद खरवड़ जैन, भंवरलाल डी. बोहरा जैन, ओंकार सिंह सिरोया जैन, बालासाहेब चोरड़िया जैन, तनसुख झामड़ जैन, रमेश भण्डारी जैन, विमलप्रकाश जैन, भंवरलाल भण्डारी जैन, बी. शांतिलाल पोखरना जैन, जगदीश चन्द्र जैन

राष्ट्रीय महामंत्री - अशोककुमार एन. पगारिया जैन

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष - महेन्द्र बोकरिया जैन

राष्ट्रीय मंत्री - विमल जैन, संजय जैन, 'निशा', कंवरलाल सूर्या जैन, सोहनलाल भण्डारी जैन, ललित मोदी जैन, जयकुमार जैन, विजय डागा जैन, पारस दुग्गड़ जैन, सुशील जैन, आनंद कोठारी जैन, प्रसन्नकुमार संचेती जैन, सागर सांखला जैन

राष्ट्रीय अध्यक्ष, युवा शाखा	राष्ट्रीय महामंत्री, युवा शाखा	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, युवा शाखा
राष्ट्रीय अध्यक्षा, महिला शाखा	राष्ट्रीय महामंत्री, महिला शाखा	राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा, महिला शाखा

एवं श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त पदाधिकारीगण, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, प्रान्तीय कार्यकारिणी समिति सदस्यगण एवं कॉन्फ्रेंस के सभी सदस्यगण

आत्म-ध्यान से जैन एकता संभव है।

- युग प्रधान सम्राट सम्राट् पू. डॉ. शिवमुनि जी म.

भगवान महावीर ने जैन आगमों में फरमाया यह संसार अनादि काल से चल रहा है। इस संसार की आदि कहीं नजर नहीं आती। इस संसार का अंत भी कहीं नजर नहीं आता। केवलज्ञानियों ने फरमाया की यह संसार अनादि काल से चल रहा है और अनंत काल तक चलता रहेगा, परंतु जीव आत्मा चाहे तो अपने व्यक्तिगत संसार का अन्त कर सकता है। उसी का नाम जैन दर्शन में मोक्ष बताया गया है।

ध्यान शतक में पूज्यपाद् वाचक वर श्री जिनभद्रगणी क्षमाश्रमणजी महाराज फरमाते है- **मोक्ष कर्म क्षय से ही होता है और वह कर्म क्षय आत्मज्ञान से होता है। यह आत्म ज्ञान ध्यान से प्राप्त होता है। इसीलिए ध्यान आत्मा के लिए हितकर है।**

मैंने शोध भारतीय धर्मों मे शोध कार्य करते हुए पाया कि सभी धर्मों में मोक्ष प्राप्ति का मार्ग ध्यान ही बताया है। अरिहंत प्रभु की कृपा से ध्यान साधना करते हुए मुझे आत्मबोध हुआ, इसी आत्मबोध को तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वाति फरमाते हैं 'सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्राणी मोक्ष मार्गः' सम्यक् दर्शन अर्थात आत्म दर्शन, आत्म ज्ञान और आत्म रमण ही मोक्ष मार्ग है। यह मार्ग मुझे ध्यान के द्वारा अनुभूत हुआ। और मैं उस मार्ग पर अति उत्साह के साथ आगे बढ़ रहा हूं।

मुक्ति का आधार है वैराग्य वैराग्य से व्यक्ति मुनि बनता है और मुनि एक दिन वीतरागी बनता है। मेरी भी यात्रा वैराग्य से प्रारंभ हुई। मैं एक मुनि बना। मुनि बनकर मैं आध्यात्म साधना में आगे बढ़ने लगा। किन्तु धीरे-धीरे काल और वातावरण के प्रभाव से वैराग्य धीमा होता गया। मन, वचन, काया, पद, प्रतिष्ठा, संघ, समाज सम्प्रदाय, आदि का प्रभाव मुझ पर पड़ने लगा। किन्तु आत्म ध्यान के द्वारा अरिहंत वाणी से पुनः मेरा उत्कृष्ट वैराग्य जागृत हुआ। अब मेरा एकमात्र लक्ष्य है कि मैं आत्म ध्यान से आत्मज्ञान की ओर आगे बढ़ूं। आत्म ज्ञान से सर्वकर्म क्षय कर मोक्ष को प्राप्त करुं।

ध्यान से मैंने अपने जीवन का बदल दिया। मेरी वृत्तियाँ बदल गयी, मेरा जीवन आनंद से शांति से भर गया। मैं तृप्त हो गया मैंने अष्ठ गुणों का ध्यान करते हुए सिद्धों जैसे सुख को इसी जीवन में प्राप्त किया। अरिहंत कृपा से भेद-विज्ञान से मेरा जीवन रूपान्तरित हो। मेरी भावना है कि भरत क्षेत्र में प्रत्येक जीव को वीतरागता का मार्ग मिले। सभी जीव शाश्वत सुख, शांति, आनंद, ज्ञान को प्राप्त करें। अब मेरे जीवन की प्रत्येक श्वांस का प्रयोग वीतरागता के लिये हो।

वर्तमान का समय जैन एकता का है। हम सभी जैन वीतरागता के प्रयोग में एक हो। प्रत्येक व्यक्ति को सुख, शांति, आनंद की आवश्यकता है। आत्म-ध्यान से पूरे विश्व को हम आनंद-शांति ज्ञान से परिपूर्ण कर सकते है। मेरे जीवन का सार है वीतरागता। मेरा हर पल आनंद से बीत रहा है। जगत के सभी जीव आनंद से जीएं। जीने के कला सबको प्राप्त हो हम भी उसमें निमित्त बने। यही मंगल कामना।

✧✧

प्रवर्तक परम पूज्य भण्डारी पू. श्री पदमचंद्र जी म. के जन्म शताब्दी दिवस पर संत-सतीवृंदों के उद्‌गार...

मानवता के मसीहा का अभिनन्दन

उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्रद्धेय भण्डारी श्री पद्‌मचन्द्र जी महाराज का जन्म शताब्दी पुण्य पर्व सम्पन्न होने जा रहा है। श्रद्धेय भण्डारी जी महाराज मानवता के मसीहा थे। जनकल्याण में उन्होंने अपना समग्र जीवन समर्पित किया था। पूज्य प्रवर्तक श्री के शिष्य-प्रशिष्य परिवार ने उनके शताब्दी वर्ष में जन-कल्याण और आत्म-कल्याण के कई अभियान चलाकर अपने आस्था पुरुष का अनूठा अभिनंदन किया है। मैं श्रद्धेय प्रवर्तक श्री जी के कालजयी जीवन का अभिनंदन करता हूँ और उनके शिष्य-प्रशिष्य परिवार के श्रेय-अनुष्ठान के लिए साधुवाद देता हूँ।

- आचार्य सम्राट् शिव मुनि जी म.

चंदन-सम सुशीतल संत का अभिनंदन

चंदन का वृक्ष शीतलता और सुगंध से सभी को प्रसन्नता और आनंद की अनुभूति कराता है। काटने वाली कुल्हाडी को भी चंदन सुवासित कर देता है। चंदन की तरह ही संत-जीवन होता है। ऐसे ही संतत्व से सम्पन्न थे उत्तर भारत प्रवर्तक श्री पद्‌मचन्द्र जी म. 'भण्डारी'। अपने जीवन के उभरते यौवन के पड़ाव पर ही संयम के पावन पथ पर आपके चरण चल पडे थे। अपनी साधना, मधुर वाणी तथा परम करुणा से आपने जन-जन में धर्म की अलख जगाई। जिनशासन की गरिमा में अभिवृद्धि की। आप श्री के जीवन-संदेशों को भारतवर्ष में जन्म-शताब्दी के आयोजन द्वारा पहुँचाया जा रहा है।

उपप्रवर्तक श्री पंकज मुनि जी म. तथा संतवृंद के श्रद्धा भक्तिपूर्ण मार्गदर्शन में गतिशील शताब्दी आयोजन के विविध चरणों का अभिनंदन, साधुवाद!

- युवाचार्य महेन्द्रऋषि जी म.

ऐतिहासिक आगम-प्रचारक को नमन

साधुता की विमल-धवल साकार प्रतिमा उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्रद्धेय भण्डारी श्री पद्‌मचन्द्र जी म. 20वीं सदी के एक महान मुनि थे। जैन आगमों और जैन साहित्य के लेखन, सम्पादन और प्रचार-प्रसार में उन्होंने जो ऐतिहासिक कार्य किए वे सदियों तक स्मरण किए जाते रहेंगे। आगमों का अंग्रेजी रुपान्तरण और सचित्र प्रकाशन उनका एक चिर श्रम साध्य कार्य है। अपने इस उदात्त कार्य के रुप में वे सदा अमर रहेंगे। जन्म शताब्दी पुण्य पर्व पर श्रद्धेय भण्डारी जी म. के यशस्वी जीवन का हार्दिक अभिनंदन।

- सुभद्र मुनि जी म.

मेरे गुरु-तुल्य हैं पूज्य प्रवर्तक श्री जी

अत्यंत हर्ष का विषय है कि उत्तर भारत के उपासक समुदाय तथा शिष्य समुदाय द्वारा उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्‌मचन्द्र जी म. का जन्म शताब्दी महोत्सव तप, जप, स्वाध्याय और मानव सेवा के विविध

अनुष्ठानों के माध्यम से मनाया जा रहा है। पूज्य प्रवर्तक श्री जी मेरे लिए गुरु-तुल्य थे। उनके आशीष, स्नेह और शिक्षाओं का पाथेय आज भी मेरे पथ का आधार है। उनकी स्नेहिल साधु-मूर्ति मेरे हृदय-मंदिर में आस्था पुरुष के रुप में विराजमान है। पूज्य प्रवर्तक भगवंत के जन्म शताब्दी प्रसंग पर मैं उनका अभिनंदन करता हूँ और कामना करता हूँ कि वे शीघ्र ही अपने आत्मध्येय को प्राप्त करें। **- आचार्य विजय मुनि जी म.**

धर्म द्वीप को नमन

सामान्य व्यक्ति समय की धाराओं में बहते हैं। विशिष्ट व्यक्ति उन धाराओं के मध्य एक द्वीप की रचना करता है जिसे भगवान महावीर ने 'धम्मे दीवे' कहा है। उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. ने धर्म द्वीप की रचना की। वे स्वयं धर्म द्वीप बने। उनका धर्म-द्वीप असंख्य उपासकों का आधार बना। श्रद्धेय धर्म-द्वीप धर्म-धुरीण मुनिराज के जन्म शताब्दी पर शत्-शत् नमन। **- उपाध्याय रमेश मुनि जी म.**

सृजनधर्मी परम पुरुष श्री भण्डारी जी म.

जीवन जीना सामान्य बात है। जीवन को कलात्मक और रचनात्मक बनाना विशिष्ट बात है। उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.का जीवन विशिष्ट है। तप, जप, संयमीय कलाओं से सुरचित है। समाज-सेवा, साहित्य-सृजन, संघीय एकता के असंख्य उपक्रम उनकी रचना धर्मिता के पावन प्रमाण हैं। सृजनधर्मी परम पुरुष का शताब्दी जन्म प्रसंग पर हार्दिक-अभिनंदन। **- उपाध्याय जितेन्द्र मुनि जी म.**

विश्ववंद्य संत को प्रणाम

भारतीय संस्कृति में संत का स्थान सर्वोपरि है। अकिंचन होते हुए भी संत राजाओं-महाराजाओं और चक्रवर्तियों द्वारा अर्चित-वंदित रहा है। इसका कुल कारण है-संत की आध्यात्मिक संपदा। उसी आध्यात्मिक सम्पदा के स्वामी थे पूज्य उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.। वे भौतिक दृष्टि से अकिंचन थे, परंतु आध्यात्मिक दृष्टि से परम समृद्ध थे। अपनी इसी सम्पदा को वे आजीवन लोक में बांटते रहे। यही कारण है कि समाज आज बहुत-बहुत कृतज्ञता से उनकी शताब्दी जन्म जयंती मना रहा है। पूज्य श्री के महनीय जीवन को कोटि-कोटि प्रणाम! **- उपाध्याय प्रवीण ऋषि जी म.**

स्वर्णाक्षरित साधक की अभिवंदना

पंजाब की गौरवशाली श्रमण-परम्परा में उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज का नाम स्वर्णाक्षरों में उट्टंकित है। उनका ज्ञान-ध्यान उच्चकोटि का था। हृदय कोमल-कमित भावों का अक्षय कोष था। सब के हृदयों में बस कर रहना और सभी को अपना बना लेने की कला में वे निष्णात थे। उत्तर भारत की परिधियों को पार कर भारत के सुदूर अंचलों तक उनकी साधुता की सुगंध व्याप्त हुई। जन्म शताब्दी वर्ष पर मैं श्रद्धेय प्रवर्तक जी के सद्गुणों की अर्चना-अभिनन्दना करता हूँ। **- उपाध्याय मूल मुनि जी म.**

महान धर्म-प्रभावक प्रवर्तक श्री जी

उत्तर भारतीय प्रवर्तक परम सरलात्मा भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. अपने समय के बड़े पुण्यवान संत थे। उनकी पुण्याई अति उत्तम एवं प्रशंसनीय है। आपने धर्मस्थानों एवं धार्मिक संस्थाओं की महती प्रभावना की। अनेक जगहों पर धर्मस्थान बनवाये। सामाजिक कार्यों को गति दी। आपने प्रवचन प्रभावक प्रवर्तक श्री अमर

मुनि जी जैसा सन्त समाज को दिया। जिसके लिए पूरा चतुर्विध श्रमण संघ आपका ऋणी रहेगा। जन्म-शताब्दी वर्ष की पावन वेला में आराध्य गुरुदेव श्री सुमति प्रकाश जी म. तथा गुरु निहाल परिवार की ओर से शत्-शत् वंदना अर्पित करते हैं।

- उपाध्याय डॉ. विशाल मुनि जी म. 'वाचनाचार्य'

गुरु पद्म जन्म शताब्दी पूर्णाहुति

वर्ष 2016 में पूना से प्रारम्भ नवयुग सुधारक उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. की जन्म शताब्दी समारोह अनेक धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रमों सहित सम्पन्न होने जा रही है। वर्ष भर अनेक आयोजन होते रहे। कार्यक्रमों में विविधता बनी रही जैसे जप, तप, गुणगान सभा, पर्यावरण रक्षा व जागरुकता, स्कूलों में पठन सामग्री वितरण, युवा जागृति, नारी जागृति कार्यक्रम, प्रेरणादायी लेखों का प्रकाशन, अन्नदानम् (भण्डारों) का आयोजन आदि। श्रद्धेय भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का जीवन अनेक सद्गुणों का पुँज था जो युगों-युगों तक अध्यात्म पथ के पथिकों का मार्ग दर्शन करता रहेगा।

पूज्य प्रवर्तक श्री जी के शताब्दी वर्ष के समापन पर श्रद्धेय आचार्य श्री शिव मुनि जी म. की हीरक जन्म जयंती व श्रमण संघीय युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी म. की स्वर्ण जन्म जयंती के आयोजन का जुड़ जाना सोने पर सुहागे के समान है। शताब्दी वर्ष के समापन का कार्यक्रम अपने उद्देश्यों में सफल हो, ऐसी मंगल कामना करता हूँ।

- उपाध्याय रवीन्द्र मुनि जी म.

युग प्रवर्तक थे पूज्य पद्म गुरुदेव

समाज व देश में व्याप्त कुरीतियों का निरसन कर युगानुरुप नयी सोच का प्रवर्तन करने वाला पुरुष 'युग प्रवर्तक' कहलाता है। महामहिम पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी म. भी ऐसे ही 'युग प्रवर्तक' महाश्रमण थे। जिनके 16 वर्षों के प्रवर्तक पद कार्यकाल में समाज ने चहुंमुखी उन्नति की। ऐसे 'युग प्रवर्तक' महासंत को अनंत-अनंत वंदन!

- प्रवर्तक अमर मुनि जी म.

सद्गुणों के अक्षय भण्डार श्री भण्डारी जी म.

शताब्दियों से पंजाब की धर्मधरा श्रमण-रत्नों से समृद्ध रही है। एक से एक कोहिनूर श्रमण रत्न इस धर्मधरा ने उत्पन्न किये हैं। श्रमण रत्नों की उसी शृंखला में उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. अपने नाम के अनुरुप सद्गुणों के भण्डार थे। आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म.से प्राप्त उपनाम 'भण्डारी जी' को आपने पूर्णतः साकार किया। जन्म शताब्दी वर्ष पर यथानाम तथागुण सम्पन्न प्रवर्तक श्री जी को हार्दिक नमन करता हूँ।

- प्रवर्तक मुनि सुमन कुमार जी म. 'श्रमण'

जन-जन की आस्था के केन्द्र श्री भण्डारी जी म.

उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. तीर्थंकर महावीर की श्रमण परम्परा के एक यशस्वी, मनस्वी और वर्चस्वी मुनिराज थे। उत्तर भारत में विचरण करते हुए मैंने प्रांत-प्रांत, शहर-शहर में जन-जन की जिह्वा से उनकी प्रशस्तियाँ सुनीं। सच में वे जन-जन की आस्था के केन्द्र थे। उनका सम्पूर्ण जीवन जन-कल्याण के लिए समर्पित था। उनके जन्म शताब्दी वर्ष पर उन्हें श्रद्धा से स्मरण करते हुए हार्दिक अभिनन्दन प्रस्तुत करता हूँ।

- प्रवर्तक रूप मुनि जी म. 'रजत'

युग-प्रभावक श्रमण रत्न का हार्दिक अभिनंदन

नवयुग सुधारक उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. उत्तर भारत के एक ख्याति-प्राप्त वरिष्ठ महामुनिराज थे। अपने आरध्य गुरुदेव श्री आनंदाचार्य के श्रीमुख से मैंने अनेकों बार श्री भण्डारी जी म. के सेवा, साधना और धर्मप्रभावना के रोमांचकारी किस्से सुने। सच में वे एक युगप्रभावक और युगांतकारी श्रमण रत्न थे। पूज्य श्री के जन्म-शताब्दी वर्ष पर हृदय की गहराइयों से हार्दिक नमन प्रस्तुत करता हूँ।

- प्रवर्तक कुंदनऋषि जी म.

सरल साधुता के विरल उपमान

व्यक्ति की श्रेष्ठता का मानदण्ड प्रस्तुत करते हुए भगवान महावीर ने कहा-जहा अंतो तहा बहि। अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्ति वह है जो वाणी, विचार और व्यवहार में समरुप होता है। इस मानदण्ड पर जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का जीवन शत-प्रतिशत खरा उतरता है। उत्तर भारत में विचरण करते हुए उस श्रमण शिरोमणि के मैंने अनेकों बार दर्शन किये। वे बालक की भांति सरल और तरल थे। जो मन में थे वही वचन में थे और जो वचन में थे वही व्यवहार में थे। जन्म शताब्दी पुण्य पर्व पर सरल-साधुता के उस विरल उपमान को प्रणाम करता हूँ। **- प्रवर्तक डॉ. राजेन्द्र मुनि जी म.**

क्रांतदर्शी साहित्य मनीषी को शत्-शत् नमन

उत्तर भारत के तेजस्वी-यशस्वी श्रमण रत्न पूज्य प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. के प्रत्यक्ष दर्शनों का सौभाग्य तो मुझे नहीं मिला, परंतु अपने जीवन के शैशव काल से ही उनकी कीर्ति-गाथाएं सुनता आ रहा हूँ। जैन आगमों और जैन साहित्य के प्रचार-प्रसार में उन्होंने जो कार्य किए उनका गुण-गौरव शब्दों की परिधि में समेटना संभव नहीं है। यह उन्हीं का महान श्रम है कि उन द्वारा प्रकाशित कराए गए सचित्र हिन्दी, अंग्रेजी अनुदित आगम आज विश्व भर में पढ़े-पढ़ाए जा रहे हैं। उन क्रांतदर्शी साहित्य मनीषी के जन्म शताब्दी पुण्य पर्व पर हार्दिक अभिनंदन प्रस्तुत करता हूँ। **- प्रवर्तक प्रकाश मुनि जी म. 'निर्भय'**

यथानाम-तथागुण सम्पन्न मुनिश्वर को नमन

पद्म का अर्थ कमल है और चन्द्र का अर्थ चन्द्रमा है। कमल सुगंध का और चन्द्रमा शीतल चाँदनी का प्रतीक है। प्रतीकों के इस आलोक में जब हम उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. के जीवन का अवलोकन करते हैं तो उनके संयम की सुगंध और ज्ञान की शीतल चाँदनी के दर्शन होते हैं। अपने नाम में निहीत समस्त सद्गुण प्रतीकों को उन्होंने अपने आचार में प्राणवंत किया था। धन्य हैं यथानाम तथागुण सम्पन्न पद्मचन्द्र मुनिश्वर। उन अनुपमेय मुनिश्वर को जन्म शताब्दी पुण्य प्रसंग पर हार्दिक नमन करता हूँ।

- प्रवर्तक रतन मुनि जी म.

हार्दिक अभ्यर्चना-वन्दना

स्वनामधन्य उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का भारतीय संस्कृति के महान मुनियों में एक उच्च स्थान है। हरियाणा के एक छोटे-से गांव हलालपुर में जन्मे एक साधारण-से बालक ने अपने असाधारण आचार-विचार और व्यवहार से अपने व्यक्तित्व को इतना विराट बनाया कि वे जन-जन की श्रद्धा

के केन्द्र बिन्दु बन गए। लाखों उपासकों की आस्था के आधार श्रद्धेय प्रवर्तक श्री जी के जन्म शताब्दी पावन पर्व पर हार्दिक अभ्यर्चना-वन्दना।

- प्रवर्तक मदन मुनि जी म.

पर-हित में सतत् समर्पित श्रमणराज

त्यागी-तपस्वी श्रमण रत्नों की परम्परा में उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्रद्धेय भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का संयमी जीवन आदर्श और ऐतिहासिक रहा है। आपका प्रारंभिक जीवन अपने गुरुजनों की सेवा करते हुए व्यतीत हुआ। शेष जीवन साहित्य-सेवा, धर्म-प्रचार और सामाजिक सुधार में आपने समर्पित किया। अपने सम्पूर्ण जीवन को पर-हित में समर्पित करने वाले श्रमणराज को जन्म शताब्दी पुण्य प्रसंग पर कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।

- प्रवर्तक रमेश मुनि जी म.

महान समाज सुधारक का अभिनंदन

उत्तर भारत की श्रमण परम्परा में उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। यह नाम स्मृति या अधरों पर आते ही एक ऐसे युगपुरुष का चित्र उभरता है जिसने समाज सुधार और सामाजिक समरसता के असंख्य उपक्रम किए। आपने अनेक सामाजिक कुरीतियों का निरसन कर अनेक स्वस्थ परंपराओं का श्री गणेश किया। नवयुग सुधारक, समाज सुधारक के रुप में आप उत्तर भारत के घर-घर में वंदित-अर्चित हैं। जन्म शताब्दी पुण्य प्रसंग पर आपके उदात्त व्यक्तित्व-कृतित्व का अभिनंदन करता हूँ।

- महामंत्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद'

धर्म-सूर्य की अर्चना-प्रदक्षिणा

परम श्रद्धेय उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. आत्म-हेम अध्यात्म अंतरिक्ष के एक देदीप्यमान नक्षत्र थे। अपने आध्यात्मिक आलोक से उन्होंने जन-जन की राह को आलोकित किया था। इसलिए उन्हें अध्यात्म अंतरिक्ष का धर्म-सूर्य कहा जाए तो किंचित् भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। जन्म शताब्दी के इस पुण्य प्रसंग पर उस धर्म सूर्य की हार्दिक अर्चना और प्रदक्षिणा करता हूँ।

- श्रमण संघीय मंत्री शिरीष मुनि जी म.

माधुर्य मूर्ति पूज्य प्रवर्तक श्री को हार्दिक नमन

संत के संदर्भ में श्री रामचरितमानस का सूक्त है- संत हृदय नवनीत समाना। अर्थात् संत का हृदय नवनीत के समान मृदु होता है। यह सूक्त उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. के जीवन पर शत-प्रतिशत चरितार्थ होता है। मैंने अनेकों बार उस महापुरुष के दर्शन किये। उनकी मृदुता, मधुरता, कोमलता सदैव मुझे मंत्रमुग्ध करती रही। उनकी मधुरिम प्रतिमा आज भी मेरे हृदय में विराजमान है। माधुर्य मूर्ति पूज्य प्रवर्तक श्री जी के जन्म शताब्दी पुण्य पर्व पर हार्दिक नमन करता हूँ।

- मंत्री आशीष मुनि जी म.

स्नेह और आशीष के प्राणवंत प्रतीक

उत्तर भारत में मेरे प्रथम विचरण काल में मुझे उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. के दर्शनों का कई बार सौभाग्य मिला। उन्होंने मुझे जिस आत्मीयता और स्नेह भाव से सिंचित किया, वे स्मृतियां मेरे जीवन की अनमोल धरोहर हैं। अपने निजी शिष्यवत् उन्होंने मुझे अपने आशीष और स्नेह से स्नात किया।

उनकी कृपामयी मन-मोहनी छवि आज भी मेरे हृदय में बसी है। पूज्य प्रवर्तक श्री जी का शताब्दी वर्ष सम्पन्नता पर है। इस पुण्य अवसर पर मैं पूज्य श्री के महान व्यक्तित्व का भावभीनी अभिनंदन करता हूँ।

- कमल मुनि जी म. 'कमलेश'

सफल-सजग संघनायक का अभिनंदन

मेरे आराध्य गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री शांतिस्वरुप जी म. के स्वर्गारोहण के पश्चात् श्री पद्मचन्द्र जी म. ने उत्तर भारतीय प्रवर्तक पद का उत्तरदायित्व वहन किया। पंजाब श्रमण संघ ने श्रद्धेय भण्डारी जी म. के नेतृत्व में चहुंमुखी विकास किया। वे अनुशासन में सुदृढ़ थे। परन्तु हृदय से बहुत मधुर और मिष्ठ थे। जैन धर्म के प्रचार-प्रसार में उनका कोई सानी दृष्टिगोचर नहीं होता। जन्म शताब्दी पुण्य पर्व पर उस महान आत्मा का शत्-शत् अभिनंदन करता हूँ।

- सलाहकार मुनि सुमतिप्रकाश जी म.

भक्तों के भगवान को नमन

विगत डेढ़ दशकों से भी अधिक समय से मैं उत्तर भारत में विचरण कर रहा हूँ। इस अवधि में दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल और पंजाब के अधिकांश क्षेत्रों में विचरण का अवसर मिला। इस विचरण काल में मैंने अनुभव किया कि उत्तर भारत के आबालवृद्ध की आस्थाओं में एक मुनि-पुंगव शाश्वत रुप से भगवान के रुप में विराजमान हैं। वे मुनि-पुंगव हैं उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.। जन-मानस में प्रवाहित आस्थाओं का ज्वार उस महापुरुष की श्रेष्ठता-ज्येष्ठता-महानता का जीता-जागता दस्तावेज है। उस परम पुण्य पुरुष रत्न की जन्म शताब्दी के पावन प्रसंग पर मैं अपनी ओर से तथा अपने शिष्य परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन प्रस्तुत करता हूँ।

- सलाहकार मुनि तारक ऋषि जी म.

लोक-मंगल को समर्पित साधक

इस भूतल पर लाखों लोग प्रतिदिन जन्म लेते हैं और लाखों ही काल के गाल में समा जाते हैं। उन्हीं लोगों का जीवन सफल और धन्य माना जाता है जो स्वत्व की परिधियों से ऊपर उठकर सर्वमंगल के लिए अपने आप को समर्पित करते हैं। ऐसे महान पुरुषों की शृंखला में उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का नाम अग्रिम पंक्ति में आता है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन जन कल्याण के लिए समर्पित किया था। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के लोक मंगल स्वरुप को कोटि-कोटि प्रणाम!

- सलाहकार सुरेश मुनि जी म.

ज्योतिर्मय जीवन को शत्-शत् नमन

श्रमण संस्कृति में संत-जीवन सर्वोत्तम और अद्वितीय है। संत अर्थात् सत्य, समता और साधना का प्राणवंत प्रतिनिधि। यह संतत्व अपने संपूर्ण अर्थों में जिस जीवन में साकार हुआ उन्हें हम 'उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.' इस अभिधान से जानते-मानते और पूजते हैं। पूज्य प्रवर्तक श्रीजी का जन्म आज से सौ वर्ष पूर्व इस धरा धाम पर हुआ।

अपने जीवन-दीप से उन्होंने लाखों जीवन-दीपों में सम्यक्त्व की ज्योति प्रज्वलित की। वे ज्योति पुरुष, प्रकाश पुरुष के रुप में अमर हो गए। जन्म शताब्दी पुण्य पर्व पर श्रद्धेय प्रवर्तक श्री जी के ज्योतिर्मय जीवन को शत् शत् नमन!

- सलाहकार दिनेश मुनि जी म.

मृत्युंजय मुनिराज को नमन

जहां जन्म है वहां मृत्यु है। जहां मृत्यु है वहां जन्म है। संत जन्म तो लेता है परन्तु मरता नहीं है। अपनी साधना से वह मृत्यु के भंवर को सदा के लिए मिटा देता है। वह देह से विलीन तो होता है पर जगत की आस्थाओं में सदैव अमर रहता है। उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. भी ऐसे ही संत हुए हैं। मृत्यु के भंवर को उन्होंने तैर लिया था। वे देह से भले अतीत हो गए परंतु जन-जन की आस्थाओं में वे आज भी अमर हैं। जन्म शताब्दी पर्व पर मृत्युंजय मुनिराज को नमन। **- सलाहकार सुकन मुनि जी म.**

भूतल के विमल विभूषण पूज्य प्रवर्तक श्री जी

सच्चा संत वह है जो मानव समाज को अपने आचार और विचार से जागरण का नया सवेरा देता है, अंधकार में ठोकरें खा रही मानवता को प्रकाश का उपहार देता है। ऐसे ही सच्चे संत थे उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचंद्र जी म.। धम्म दयाणं, मग्गदयाणं वे धर्मदाता थे, मार्गदाता थे। ऐसे संत इस भूतल के विमल विभूषण होते हैं। जन्म शताब्दी पुण्य पर्व पर भूतल के विमल विभूषण पूज्य प्रवर्तक श्री को प्रणाम।

- सलाहकार विनय मुनि जी म. 'भीम'

कल्पवृक्ष तुल्य महाश्रमण को कोटि-कोटि प्रणाम

उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. को समीप से देखने, उनके चरणों में बैठने और उनके आशीष का वरद्-हस्त प्राप्त करने का मुझे समय-समय पर सुअवसर प्राप्त होता रहा। पूज्य भण्डारी जी म. एक ऐसे कल्पवृक्ष तुल्य महाश्रमण थे जो बिन मांगे ही सभी की झोलियां भर देते थे। जन्म शताब्दी पर्व की सम्पन्नता पर उस कल्पवृक्ष तुल्य महाश्रमण को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।

- सलाहकार रमणीक मुनि जी म.

समाज उनके नक्शे-कदम पर चलने का प्रण लें

मेरा जन्म हरियाणा में हुआ। संयमी-जीवन का पूर्वार्द्ध उत्तर भारत में विचरण करते हुए व्यतीत हुआ। फलतः अनेकों अवसर आए जब मैंने उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. के दर्शन किए। मैं कह सकता हूँ कि वे एक पूर्ण संत थे। शुद्ध स्वर्ण। असंतत्व का लेश भी उन्हें स्पर्श नहीं कर पाया था। मधु से भी मधुर था उनका स्वभाव। सभी को अपने स्नेहांचल में समेट लेते थे। पूज्य श्री प्रवर्तक जी म. का जन्म शताब्दी पुण्य पर्व श्रावक और साधु समाज के लिए आदर्श है। इस आदर्श को हम सहेजें और उस पुण्य पुरुष के नक्शे-कदमों पर चलने का प्रण लें। **- सलाहकार राम मुनि जी म.'निर्भय'**

नवयुग सुधारक थे गुरुदेव

पूज्य प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी म. के कुशल नेतृत्व में जिनशासन की प्रभावनाओं के जो कार्य हुए, वह न केवल श्रमण संघ के लिए अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए अपने आप में एक स्वर्णिम युग था। प्रभु महावीर की शिक्षाओं का प्रचार व युवाओं के हृदय में धर्म की झंकार जिस प्रकार उन्होंने जगाई थी, वह सच में बेमिसाल थी। उन नवयुग सुधारक गुरुदेव को नमन! **- उप प्रवर्तक पंकज मुनि जी म.**

राष्ट्र सन्त थे श्री पद्म गुरुदेव

धर्म, ग्रंथ, संपद्राय व जातिगत भेदभावों की दीवारों से मुक्त सर्वधर्म समन्वय की साधना को समर्पित उत्तर भारतीय प्रवर्तक पूज्य दादा गुरुदेव श्री भण्डारी जी म. ने व्यसनमुक्त एवं शिक्षा व संस्कार युक्त एक सुंदर समाज, देश और राष्ट्र के नव निर्माण हेतु जिस प्रकार अपना 84 वर्षीय जीवन अर्पित किया, तदर्थ राष्ट्र तो क्या सम्पूर्ण मानवता उनकी ऋणी रहेगी।

सच में उनके गरिमा एवं महिमा मंडित जीवन से न केवल राष्ट्र अपितु 'राष्ट्र सन्त' पद भी गौरवान्वित हुआ था। ऐसे राष्ट्र सन्त की जन्म शताब्दी पर हार्दिक-हार्दिक अभिनंदन!

- अमर शिष्य वरुण मुनि जी म.

अक्षय गुणधाम श्री भण्डारी जी म.

उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. जैन श्रमण परम्परा के एक महान मुनिराज थे। श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी म. की छत्रछाया और निर्देशन में आपने अपने जीवन को स्वर्ण से कुंदन बनाया।

आप में विकसित सद्गुण राशि को देखकर ही आचार्य श्री ने आपको 'भण्डारी जी' यह उपनाम प्रदान किया था। इसी उपनाम से आप आजीवन भारतभर में विश्रुत रहे। शताब्दी पुण्य पर्व पर अक्षय गुणधाम पूज्य प्रवर्तक श्री का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ।

- प्रवर्तिनी साध्वी चंदना जी म.

आगम-पुरुष का अभिनंदन

जैसे गुलाब के कण-कण में सुगंध और मधु के अंश-अंश में माधुर्य होता है वैसे ही उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. के आचार में सद्गुणों की सुगंध और वाणी में सत्य का माधुर्य व्याप्त था। वे उच्चकोटि के समाज-सुधारक और साहित्य प्रेमी थे। उनकी आगम-भक्ति बेमिसाल थी। विश्व में प्रथम बार उन्होंने आगमों का अंग्रेजी अनुवाद कराया।

अंग्रेजी अनुदित सचित्र आगमों को प्रकाशित कराके उन्होंने विश्व के कोने-कोने में जिनवाणी को पहुंचाया। उनका यह ऐतिहासिक कार्य सदैव अमर रहेगा। जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि उन द्वारा शुरु किए गए इस महान कार्य को मंजिल तक पहुंचाएं। ऐसा करके ही हम उस शताब्दी-पुरुष, आगम-पुरुष का सच्चे अर्थों में अभिनंदन कर पाएंगे।

- प्रवर्तिनी साध्वी डॉ. सरिता जी म.

ज्ञानी-ध्यानी-योगी पूज्य प्रवर्तक श्री जी

उत्तर भारत की महान श्रमण परम्परा में पूज्य प्रवर्तक भगवंत भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का स्थान अद्वितीय और अप्रतिम है। पूज्य प्रवर्तक श्री का सम्पूर्ण जीवन तप, त्याग, ज्ञान और ध्यान से पूर्णतः निमज्जित था। बहुत कम वचन व्यवहार करना और निरन्तर जप में संलग्न रहना उन्हें प्रिय था। उनकी कीर्ति कौमुदी आज सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैल रही है। जन्म शताब्दी के महनीय अवसर पर जपयोगी प्रवर्तक भगवंत के चरणों में कोटि-कोटि वंदन करती हूँ।

- प्रवर्तिनी साध्वी सुधा जी म.

एक महान त्यागी सहस्त्रमल जी म.

- पू. श्री पदम मुनि जी म.

जिस महान व्यक्तित्व के बारे में मैं दो शब्द अंकित करने का प्रयास कर रहा हूँ वे महापुरुष असाधरण व्यक्तित्व के धनी थे। वैसे भी यह भारत माता महान सपूतों की पवित्र जन्म स्थली है। भौतिक दृष्टि से भी यह धन-धान्य से परिपूर्ण हैं एवं साहित्यिक दृष्टि से भी व अध्यात्मिक दृष्टि से भी अनेक महान रत्नों की जननी इसी भारत भूमि में अनेकों महान आत्माओं ने जन्म लेकर अपने जीवन से सारी दुनिया को एक नया रास्ता दिखलाया, एक नई दिशा दी। उन्हीं महान पुरुषों की श्रेणी में पूज्य भगवन श्री सहस्त्रमल जी म. का नाम भी जैन जगत में बड़े सम्मान से लिया जाता है पूज्य गुरुदेव का व्यक्तित्व हिमालय से भी महान था। पूज्यवर महान त्यागवृत्ति के धनी थे। प्रकृति से उदार, हृदय से सरल, आचार-विचार व व्यवहार में बेजोड़ थे। जैसे कि एक गुलाब का फूल जब टहनी पर खिलता है तब भी उसमें भीनी-भीनी महक रहती है और टहनी से अलग हो जाने पर भी उसकी सौरभ को कोई नष्ट नहीं कर सकता है। वैसे ही संत, योगी, महात्मा इस विश्व रंगमंच पर अपने विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्व की कला की अमिट छाप इस तरह छोड़ जाते हैं जिससे कि इतिहास सदियों तक उनके नाम को याद रखता है। क्योंकि वे केवल भौतिक शरीर से ही इस संसार से विदाई लेते हैं, अध्यात्मिकता एवं उनकी महानता भक्तों के हृदयों में सदा-सदा के लिए अंकित रहती है। श्रेष्ठ गुणों के धनी पूज्य गुरुदेव का जन्म आज से लगभग 122 वर्ष पहले वि.स. 1952 में राजस्थान प्रांत के अंतर्गत मेवाड के टाटगढ़ ग्राम में पीतलिया गोत्रीय ओसवाल वंश में हुआ। जिनत्व के संस्कार माता-पिता व परिवार से विरासत में मिले। बाल्यकाल से ही आप सहृदय और जिज्ञासुवृत्ति के बालक थे। सच्चे सद्गुरु की खोज करते-करते आपश्री दिल्ली (चाँदनी चौक) आए सुसंयोग से वहाँ पर आपको स्थानकवासी परम्परा के महान के महानमुनि पूज्य श्री देवीलाल जी म. आदि मुनिराजों के दर्शन हुए। अपनी जिज्ञासा का सही समाधान पाने से जैसे ही गौतम/महावीर भगवान के चरणों में समर्पित हो गए। इसी तरह आप भी पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में उसी चातुर्मास में संवत्सरी से एक दिन पहले बड़ी सादगी से भादवा सुदि चतुर्थ सं. 1974 को आर्हती पूज्या अंगीकार की सेवा, स्वाध्याय व तपस्या की त्रिवेणी में डुबकी लगाने लगे। तत्वान्वेसी होने के कारण आप विद्वान मुनि के रुप में संघ में विश्रुत हो गए।

फलस्वरुप आचार्य भगवन पूज्य श्री खूबचंद जी म. ने आपको उपाध्याय पद पर शोभित किया। कालांतर में वि.सं. चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को नाथ द्वारा में चतुर्विध श्रीसंघ ने आपको आचार्य पाट पर नियुक्त किया। वि.स. 2009 में आपने अखिल भारतीय श्वे. स्था. जैन श्रमण संघ के पावन प्रसंग पर सबसे पहले आपने महान आचार्य पद का त्याग करके महानता का परिचय दिया। श्रमण संघ में आपश्री मंत्री पर नियुक्त हुए, आपने ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग से आपश्री आजीवन संघ को सुदृढ़ व समुन्नत करते रहे। हजारों श्लोक, गाथाएं लावणियां आदि की आपने रचना की। वि.स. 2015 माघ शुक्ला पूर्णिमा को आप इस जग को अलौकित करके सलेखना सहित रुपनगढ़ अजमेर (राजस्थान) में देह को त्याग करके देवलोक अनंत यात्रा पर बढ़ गए। इस पावन 100 वें दीक्षा दिवस पर समस्त दिवाकर उपासकों व अपनी तरफ से हृदय की गहराईयों से श्रद्धा पुष्प अर्पित करते हुए कामना करते हैं आपके गुण हमारे अंदर भी आ जाएं, किसी शायर ने कहा है:-

जिन्दगी ऐसी बना के जिन्दा रहे दिलजाद,
जब न हो दुनिया में तो दुनिया को आए याद।

शताब्दी पुरुष का श्रद्धार्चन अभिनंदन

- पू. श्री वरुण मुनि जी म. 'अमर शिष्य'

राष्ट्र संत उत्तर भारतीय प्रवर्तक गुरुदेव भण्डारी पू. श्री पद्मचन्द्र जी म. जैन जगत के एक जाज्वलमान नक्षत्र थे। उनकी साधना-आराधना जिनत्व से अनुप्रमाणित थी। वे जैन परिवार में जन्मे। जैन संस्कारों में पले-बढ़े। जैनत्व में दीक्षित हुए। जैनत्व को उन्होंने आजीवन जीया। जैनत्व में समग्रता से घुले-मिले होकर भी वे जन-जन के संत बने। समग्र मानव जाति के उत्थान और कल्याण के लिए वे अहर्निश श्रमशील रहे। लाखों जनों में उन्होंने जिनत्व की प्यास जगाई। शिक्षा और संस्कार के माध्यम से उन्होंने लाखों लोगों के जीवन रुपांतरित किए। 'श्रेष्ठ सुसंस्कारित मनुष्य' के निर्माण में उनकी गहरी रुचि थी। उनकी यह रुचि उनके जीवन के अंतिम क्षण तक निरंतर वर्धमानित होती रही।

पूज्य गुरुदेव का जन्म वि. सं. 1974 (सन् 1917) को विजय दशमी के दिन हरियाणा प्रांत के सोनीपत जनपद के अंतर्गत हलालपुर ग्राम में हुआ। जैन संस्कारों में रचे-बसे वैश्य कुल शिरोमणि श्री गणेशीलाल जी का पितृत्व एवं मातृ भगवती श्रीमती सुखदेवी जी का मातृत्व आपको पुत्र रुप में प्राप्त कर मुकुलित हो उठा। मानो माता-पिता को जगत भर का साम्राज्य मिल गया हो। अतः नाम रखा गया देशराज। चार अग्रज भ्राताओं की गोद में खेलते हुए देशराज बड़े होने लगे। योग्य वय में शिक्षा-दीक्षा का क्रम सुचारु रूप से चला। दिल्ली में पढ़ते हुए 'आत्मा के राम' श्रद्धेय आचार्य सम्राट पू. श्री आत्माराम जी म. के दर्शनों का सौभाग्य मिला। श्रद्धेय गुरुराज का प्रथम दर्शन ही - **'क्षणमिह सज्जन संगतिरे का भवति भवार्णव तरणे नौका'** आपके लिए संसार सागर से पार उतारने वाली नौका बन गया। परिणाम स्वरुप युवा श्री देशराज जी ने पंजाब के रामपुर वुसहरा नामक नगर में वि.सं. 1991 माघ वदी पंचमी सन् 1934 को जैन आर्हती दीक्षा स्वीकार कर ली। श्रद्धेय आचार्यश्री ने आपको अपना प्रशिष्यत्व और संस्कृत - प्राकृत विशारद पण्डित श्री हेमचन्द्र जी म. का शिष्यत्व प्रदान किया। पद्म (कमल) की भांति सुगंध और चन्द्र की भांति शैतिल्य का आप जगत में प्रसार करें, इस भाव से आपको मुनि 'पद्मचन्द्र' नाम प्रदान किया गया।

श्रद्धेय आचार्यश्री के भावों को मुनिश्वर श्री पद्मचन्द्र जी ने शत-प्रतिशत रुप में साकार किया। आपने-अपने संन्यास की शुरुआत एक सेवाभावी मुनि के रुप में की। श्रद्धेय आचार्यश्री की सेवा में आप उनके जीवन के अंतिम क्षण तक तन-मन-प्राण से समर्पित रहे। शारीरिक सेवा के साथ ही साहित्यिक सेवा में भी आपने अनुपम सहयोग किया। आचार्यश्री के विशाल श्रुत वाङ्मय के व्यवस्थापक संरक्षण में आप अप्रमत्त श्रमशील रहते थे। साधु-साध्वी संघ में वितरण हेतु आचार्य श्री द्वारा संग्रहित वस्त्र, पात्र, रजोहरण आदि उपकरणों के व्यवस्थापन का दायित्व भी आचार्यश्री ने आपको दिया था। आपके सुघड़-समुन्नत व्यवस्थापन से श्रद्धेय आचार्यश्री इतने संतुष्ट और प्रसन्न थे कि उन्होंने आपको 'भण्डारी जी' नाम प्रदान किया। अपने संपूर्ण जीवन-काल में आप इसी विशेषण से संघ में विश्रुत रहे। आचार्यश्री के साथ-साथ आपने गुरुमय स्वामी श्री जयरामदास जी म., गुरुमह श्री शालिग्राम जी म., गुरुदेव पण्डित श्री हेमचन्द्र जी म. पंजाब प्रवर्तक उपाध्याय श्रमण श्री फूलचन्द्र जी म., आदि

गुरुजनों की प्रभूत सेवा का सौभाग्य भी सहज ही प्राप्त किया। सेवा के मेवा के रुप में आपको एक महान मनस्वी शिष्य की प्राप्ति हुई। उन शिष्य सत्तम का नाम है श्री अमर मुनि जी म.। यह एक ऐसा नाम है जो विगत सात दशकों से चतुर्विध संघ के हृदय में आस्थाओं का उल्लास बनकर परिस्पंदित होता रहा। उनकी स्वर लहरियों को सुनकर श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते थे। उनकी वाणी की मिठास, विचार की विराटता और व्यवहार की शुचिता उन्हें आस्था पुरुष के पद पर प्रतिष्ठित करती थी। यह गुरुदेव भण्डारी जी म. की ही उदात्त रचनाशीलता थी कि उन्होंने एक ऐसे श्रेष्ठ शिष्य, श्रेष्ठ संत और श्रेष्ठ युगसृष्टा महाश्रमण का निर्माण किया।

गुरुदेव श्री भंडारी जी म. एवं शिष्य सत्तम श्री अमर मुनि जी म. ने एक साथ मिलकर उत्थान-निर्माण संस्कार के असंख्य उपक्रम किए। श्रद्धेय गुरुदेव के हृदय में जिनवाणी के प्रचार-प्रसार की अपूर्व उमंग थी। आपने-अपने व्याख्यानों में तो जिनवाणी का प्रचार-प्रसार किया ही, साहित्य के माध्यम से भी इस महनीय अनुष्ठान को आगे बढ़ाया। प्रारंभ में आपने संस्कृत-प्राकृत से हिन्दी में और हिन्दी से पंजाबी (गुरुमुखी) आदि क्षेत्रीय भाषाओं में जैन साहित्य को अनुवादित कराके वितरित कराया। आपकी यह भावना थी कि जैन आगम विश्व के कौने-कौने में पढ़े-पढ़ाये जायें। इसके लिए आपने अपने शिष्य-सत्तम को प्रेरणा प्रदान कर आगमों के इंग्लिश अनुवाद का कार्य प्रारंभ कराया। साथ ही आगम के विषयों के अनुरुप मनभावन रंगीन चित्रों को तैयार कराया। इस भांति हिन्दी, अंग्रजी अनुवाद सहित सचित्र आगम प्रकाशन की शृंखला प्रारंभ की। आप द्वारा प्रारंभ किया यह ऐतिहासिक श्रुत अनुष्ठान, श्रद्धेय प्रवर्तक भगवंत गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म. द्वारा शिखर तक पहुंचाया गया। आज अमेरिका, इंग्लैड़, कनाड़ा, जर्मनी आदि देशों में यह सचित्र अंग्रेजी अनुदित आगम बड़े भाव और चाव से पढ़े पढ़ाए जाते हैं।

- श्रद्धेय गुरुदेव ने भगवान महावीर की 2500वीं निर्वाण शताब्दी पर हजारों की संख्या में पुस्तकें वितरित कराई।
- अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाड़ा, जर्मनी और देशों की लाईब्रेरियों में जैन साहित्य निःशुल्क भिजवाया।
- पंजाब विश्वविद्यालय पटियाला में जैन चेयर की स्थापना आपश्री की प्रेरणा से हुई।
- आपश्री की प्रेरणाओं से उत्तर भारत में अनेक ग्रामो-शहरों में सौ से अधिक वाचनालयों, औषधालयों, विद्यालयों आदि की स्थापना हुई।
- दर्जनों नए क्षेत्रों का आपने उद्घाटन किया।

दीक्षा-दानेश्वर के रुप में श्रद्धेय गुरुदेव विश्रुत हैं। आपश्री ने अपने जीवन-काल में शताधिक मुमुक्षओं को जैन भागवती दीक्षा का पावन पाठ प्रदान किया। श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर वर्तमान अनुशास्ता श्रद्धेय पू. श्री डॉ. शिवाचार्य श्री ने भी आपश्री के श्रीमुख से आर्हती प्रव्रज्या का अभिमंत्र ग्रहण किया था।

श्रद्धेय गुरुदेव लगभग सोलह वर्षों तक उत्तर भारतीय प्रवर्तक पद पर अधिष्ठित रहे। उक्त स्वर्णिम अवधि में उत्तर भारत में श्रमण संघ का चहुमुखी विकास हुआ।

सन 2016-17 श्रद्धेय का जन्म शताब्दी वर्ष है। अन्न-वितरण, साहित्य वितरण आदि भव्य अनुष्ठान सम्पन्न किए जाए रहे हैं।

श्रद्धेय गुरुदेव के हृदय में जैन धर्म के प्रचार-प्रसार की प्रबल भावना थी। हम सब मिलकर श्रद्धेय गुरुदेव के उक्त भावों को आगे बढ़ाएं- ऐसा करके ही हम अपने आस्था पुरुषों का सम्यक् रुप से श्रद्धार्चन अभिनंदन कर पाऐंगें। ✧✧

हीरक जयंति वर्ष ...

शिवाचार्य भगवन को नमन

- सलाहकार पू. श्री रमणीक मुनि जी म.

आत्म-ध्यान क्षितिज के ज्योतिर्मय नक्षत्र, श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर, ध्यानयोगी आत्मयोगी आचार्य सम्राट भगवन श्री शिव मुनि जी म.सा. इस युग के महान, अति सौम्य और सरलता से परिपूर्ण उज्जवल मानस की अति सुन्दरतम अभिव्यक्ति है। आपके जीवन में आचार्यश्री की आठ सम्प्रदायें सहज ही परिलक्षित होती हैं।

सौभाग्य है इस युग का और श्रमण संघ का जिसे कुल सम्पन्न, रूप सम्पन्न, विद्या सम्पन्न और आध्यात्म ऐश्वर्य सम्पन्न आचार्य भगवन् की छत्र छाया सम्प्राप्त है।

प्रभु! आपकी 'आत्म-ध्यान-साधना' पद्धति बड़ी ही अनूठी है। 'आत्म-ध्यान-साधना' का मंगल मैत्री कलश लेकर सभी भव्यात्माओं का आत्माभिषेक करने का भगीरथ प्रयास आपके व्यक्तित्व को आकर्षक ही नहीं अपितु अनुमोदनीय बना रहा है।

इस आत्म-ध्यान-साधना को प्राप्त करने में आपने अनेक प्रतिकूलताओं का साहस पूर्वक सामना किया है। गजब की संकल्प शक्ति से आपने इस आत्म रसायन को प्राप्त किया है। जैन भागवती दीक्षा प्राप्त करते ही आपकी प्यास सिर्फ महावीर की आत्म-ध्यान-साधना की खोज बन गई। आपके पूर्ववर्ती आचार्यों के पास भी यह साधना थी, किन्तु स्वयं तक सीमित थी। जन-मानस उससे अछूता था। जो आपने पाया उसे लोगो के बीच बांटने का आपका अद्भुत शौर्य अनुकरणीय है। ध्यान की गरिमा और महिमा आपके चुम्बकीय व्यक्तित्व से सहज ही अभिव्यक्त होती है। आपकी सम्पूर्ण चेतना शक्ति ध्यानमय हो गई है। आप जब समवशरण में बैठते है और बोलते है तो जन मानस के नेव और कर्ण स्वतः ही एकाग्र हो जाते हैं। पूर्व में जो साधक और श्रावक आपका विरोध करते थे वो आज आपके सामने नतमस्तक ही नहीं अपितु इस आत्म-रसायन की खुलकर अनुमोदना कर रहे हैं। इस ध्यान-साधना ने आपको आत्मबली और महाबली बनाया है जिसकी वजह से अनेक बाहुबली आपका अनुकरण कर रहे हैं। आपके इस सम्यक् पुरुषार्थ की गूंज सर्व दिशाओं में गुंजित हो रही है। अनेक जिज्ञासु और पिपासु आत्म-साधक आध्यात्मिक और आत्मिक ऊंचाईयों का स्पर्श करते हुए स्वयं को सौभाग्यशाली अनुभव कर रहे हैं। आपके पावन सान्निध्य में भौतिकवाद अध्यात्म में परिवर्तित हो रहा है।

सौभाग्य से मुझे भी आपके पावन सान्निध्य में इस अद्भुत ध्यान साधना को करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। शिविरों की अनुभूति और शिविरार्थियों की आत्मिक अभिव्यक्तियों को सुनकर सहज आनन्दानुभूति हुई है।

मेरे प्यारे भगवन! अन्तर की सहज स्फूर्त भाव भंगिमायें शब्द-पुष्प बनकर आपके बहुआयामी व्यक्तित्व की परिक्रमा करते हुए आपके 'अमृत-महोत्सव' के पावन प्रसंग पर हार्दिक शुभकामनायें और बधाईयां प्रेषित कर रहें है। आप इन्हें मैंत्री भाव से अनुभूत करते हुए मुझे अनुग्रहित करें।

आप सदैव स्वस्थ रहें, शासन दिपायें महाविदेह क्षेत्र का स्पर्श करते हुए सिद्धालय की यात्रा सम्पन्न करें।

✧✧

शिव भगवन् जिनमें नजर आयी ईश्वर की छवि

- पू. श्री निशांत मुनि जी म.

शिव ही मन्दिर शिव ही पूजा शिव मूरत मतवाली
बिन गुरु के जीवन ऐसा जो बगिया बिन माली।।

शिव भगवन् की अटल शक्ति, योग साधना, जागरूक जीवन, ध्यानज्योति, ज्ञान गुणों के मोती आदि अन्य विशेष गुणों का अंकन करना। मुझ अबोध शिशु के लिये कैसे संभव है।

शिव कथा, शिव महिमा, शिव सत्य को कहना कहां से प्रारम्भ करूं । संसार में त्रिदेवों की महिमा है। ब्रम्हा, विष्णु, महेश। ब्रम्हा इसलिए पूज्य है क्योंकि वे सबके जनक है इसी तरह शिवाचार्य जी भी श्रमण संघ के सरताज ही नहीं वरन कृपा के सागर, सिन्धु जनक से भी सर्वोपरि हैं। विष्णु पालक है तो शिव सम्राट भी अपनी मंगल मैत्री की अभिवर्षा से प्राणी मात्र के पालक है और आशुतोष महादेव उद्धारक है तो आपने आज तक न जाने कितने व्यक्तियों का भव रोग, मोह रोग, काम रोग, अज्ञान रोग को दूर हटाकर उद्धार किया है।

पतित को पावन बनाया। मिथ्यात्वी को सम्यक्त्व की राह दिखाई। रागी को वीतरागी बनने की प्रेरणा दी। ऐसे सद्गुरु देव त्रिदेवो से कम नहीं। आपके भीतर इन तीनों की दैवीय शक्तियों के गुण नजर आते हैं।

माँ हमें जन्म देती है, गुरु जीवन। माँ ममता को पोशण देती है, गुरु समता के संदेश से पुष्ट करते है। माँ संस्कार देती है, गुरु अध्यात्म के क्षेत्र का संरक्षण देते हैं। ऐसे परम पूज्य गुरुदेव की विलक्षणता महिमा का कैसे गुणगान करूं?

भगवन् का मंगल उद्घोष है एक पत्थर तभी तक सलामत रहता है, जब तक पहाड़ से जुड़ा रहता है। एक पत्ता तभी तक सलामत रहता है, जब तक वह पेड़ से जुड़ा रहता है और एक इन्सान तभी तक सलामत रहता है, जब तक वह अपने आप से जुड़ा रहता है। अपने आप से जुड़ने का अमोघ साधन - आत्म-ध्यान।

भगवन् फरमाते हैं जीवन की तीन अवस्थाऐं है- जाग्रत अवस्था, सुप्तावस्था, स्वप्नवस्था। इन तीनों से परे चौथी अवस्था है तुरीया अवस्था। यह ध्यान से ही साधना आती है। इसी से मूर्च्छा टूटती है, बेहोशी मिटती है, हमारा जीवन विकसित होता है। हमें जीवन के प्रति जागरूक होना चाहिए। एक आत्मा को जान लिया। सम्पूर्ण जगत को जान लिया। तभी हम आत्मनिष्ठ से परमात्मनिष्ठ हो सकते हैं।

आचार्य भगवन का मंगलमय जीवन 76वाँ बसंत जिसमें स्व पर कल्याण की भावना से मंगल के भावों में रहकर उस मार्ग पर चलकर औरो को चलने की प्रेरणा देना। अन्त में यही कहना चाहूंगा की। साधना और सत्य के पथ पर चलकर भगवन का जीवन लालटेन की तरह हर अंधकार में भटके प्राणियों को पथ दिखा रहा है। जन्म जयंती के पावन अवसर पर शासनेश प्रभु से यही मंगल कामना। प्रभु जी जीये युग-युग और आशीष की अमृत वर्षा संपूर्ण विश्व पर बरसती रहे।

काम करो ऐसा की पहचान बन जाये
हर कदम ऐसा चलो की निशान बन जाये।
जिंदगी काटने को तो सभी काटते हैं
पर जिंदगी ऐसी जीओं
शिवाचार्य सम मिसाल बन जाए।

✧✧

हीरक जयंती वर्ष ...

युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिव मुनि जी म.

- श्रमणी गौरव डॉ. शिवा जी म.

इस भूतल पर समय-समय पर कुछ ऐसे महापुरुष जन्म लेते है जो अपने दिव्य व्यक्तित्व और भव्य कृतित्व से मानवता को ऊँचाई प्रदान करते हैं, वे अपनी साधना, सर्जना ओर देशना से समाज और विश्व का पथ प्रदर्शक करते है, सूर्य की भांति तपकर लोक को आलोक का वरदान देते है।

ऐसे दिव्य भव्य महापुरुषों में शिवाचार्य भगवन का भी वही स्थान है जो मणि मुक्तामणि में सुमेरु का होता है, शिवाचार्य भगवन एक ऐसे साधक है जिन्होंने शव में निहित शिव और नर में निहित नारायण को देखने और जानने, पहचानने, प्रकट करने की सुदृष्टि मानव को दी।

आचार्य भगवन का जीवन एक ऐसी शोधशाला है जिसमे अढ़ाई हजार वर्षो के बाद पुनः शुद्ध सामायिक साधना अन्वेषित हुई। कोमलता के पुंज, मृदुता के कुंज, धर्म के अवतार, धर्म के आधार आत्म ज्ञानी सद्गुरुदेव युग प्रधान ध्यान योगी आचार्य सम्राट डा. शिव मुनि जी म. को पाकर माता विद्या का हृदय फुला नही समाया, आज हीरक जयंती के पावन अवसर पर हम माँ विद्या के महान उपकार से उपकृत होते हुए कृतज्ञ होते है।

30 वर्ष के भरे यौवन में वर्धमान ने महावीर होने के लिए भरे यौवन में प्रवजा अंगीकार की थी, पंचमकाल में इतिहास ने पुनः स्वयं को दोहराया, 30 वर्ष की यौवन उम्र में ही युवा शिव ने महावीर की साधना पर मुग्ध होकर प्रवजा का पथ चुना था, अकेले नही 4 बहनों के साथ, आचार्य भगवन इतिहास के प्रथम युवा है जिन्होंने डबल डबल करके दीक्षा ली थी, आचार्य भगवन दीक्षित किसी भावुकता में आकर नही हुए जिज्ञासा और उत्कृष्ट वैराग्य भाव से दीक्षित हुए । दीक्षा के बाद आचार्य भगवन की रुचि कम नही हुई, मुक्ति के स्वरूप को समझने के लिए भगवन ने भारतीय धर्मों में मुक्ति विषय पर शोध प्रारम्भ की, डॉक्ट्रेट की उपाधि लेने वालों में भी भगवन का नाम सर्वोपरी रहा।

जिससे भी आप मिलते है और जो भी आपके संपर्क में आता है वह सदा-सदा के लिए भगवन का हो जाता है पर भगवन अप्रमत्त होकर आगे बढ़ते रहते है, भगवन का जीवन ध्यान, तप, साधना से परिपूर्ण है, सन 1986 से निरन्तर भगवन तप की आराधना में लगे हुए है, श्रमण संस्कृति में आचार्य एक सर्वोच्च पद है, आचार्य भगवन एक युग प्रेरक ओर युग प्रभावक ही नही, बल्कि एक युग प्रधान आचार्य है। भगवन सदैव फरमाते है साधक को भक्त नही बनना है बल्कि भगवान बनना है। भगवन के निर्देशन में श्रमण संघ ने चहुंमुखी विकास किया है, बादल जब जल से भर जाते है तो बरसने को आतुर हो जाते है उसी प्रकार आचार्य भगवन ने भी जो प्राप्त किया है उसे बांटने के लिए ध्यान शिविर के माध्यम से उत्सुक हुए, भगवन के भीतर तड़प है जो मैंने पाया है वो तुम भी पाओ, अपना स्वयं से स्वयं का परिचय करो, मैं कौन हूँ कहा से आया हूँ ये चिंतन भगवन ही कराते है, मैं ओर मेरे अपने का अनुभव भगवन ही कराते है।

ध्यान योगी तप सयंम साधक,
गुण रत्नों की अनुपम खान,
36 गुण धारक संघ संचालक,
शिवाचार्य युगपुरुष महान। ✧✧

हीरक जयंती वर्ष ...

शिव सुखों के मानसरोवर - शिवाचार्यश्री जी महाराज

- महासाध्वी पू. श्री अनुपमा जी म.

हम कुछ ख्याल बटोर रहे थे शब्दो के आंगन में गुरु महिमा, प्रभु महिमा लिखने की खातिर कभी ख्याल खो जाते है, कभी शब्द बिखर जाते और मेरी कलम की मुट्ठी खाली की खाली रह जाती तब याद आया कि गुरुगीत, गुरु ग्रन्थ लिखा नहीं, जिया जाता है, महसूस किया जाता है। कभी **"शिव"** नाम की खातिर तो कभी **"शिव"** नाम के साथ।

इस नाम की अमिट गाथा को कहां से प्रारम्भ करूं? इन्द्रधनुषी रंगो के बीच एक अनमिट रंग खिलता गुलाब पंजाब की माटी एवं माँ विद्या की बगिया मे खिला तब सम्पूर्ण पृथ्वी जगत में अद्भूत शीतल, अभिनव मनमोहक सुकुमार शिव कुमार अवतरित हुए। पूर्व एवं वर्तमान संस्कारो का ही सुनहरा संगम हुआ जिससे ऐश्वर्य रूप स्कूली शिक्षा एवं आधुनिक वातावरण के बावजूद योग एवं वैराग्य मार्ग पर आरूढ़ होने की बलवती इच्छा भाव को भांति-भांति के प्रलोभन भी नहीं मिटा सके। जिसमे कालेज, नाटक, सिनेमा, विदेष भ्रमण जैसी कई गतिविधियों को जल कमल की तरह सम्पन्न कर आये।

ज्ञान गुरु के चरणो में ज्ञान का दीया जल गया और ध्यान की खोज में कदम बढ़ाते-बढाते आत्म ध्यान के सत्य को समझा, आगमों के स्वाध्याय से सूत्र मिले, जो मंत्र बन गये और मंत्र ही सत्य तक ले पहुंचा। कैसी भी अनुकूल और प्रतिकूल निमित मिला, उसका प्रभाव आप पर नहीं पड़ा। आप न तो अनुकूलता में फिसले, इठलाये और ना प्रतिकूलता में घबराये जबकि ये प्राणी मात्र की प्रकृति हुआ करती है आप उसमें अभिन्न अडिग रहे और उस आत्म ध्यान की राह पर आये कई चट्टानों, पत्थरों झाड झंकाडो की परवाह किये बगैर चलते-चलते अपने निज मुकाम तक पहुंचकर ही विराम लिया।

कर्म तो कामधेनू की तरह होता है जो हर इंसान को अपना मनोवांछित दिया करता है, आपका कर्मयोग आपके लिए कल्पवृक्ष बन गया। सन्यास लेते वक्त हर चीज पीछे छोड़कर आगे बढता है, सिर्फ साथ आत्म विश्वास को लेकर। तब से अब तक निरन्तर अभ्यास से आप एक कर्मयोगी, तपयोगी, जपयोगी, ध्यानयोगी बने।

श्रमणसंघ के धरातल पर शिवाचार्य श्री जी का कोई विकल्प नहीं। आपका जीवन किसी के लिए मिल का पत्थर तो किसी के लिए एक मिसाल बनता है। जो चरणों में आता है खाली नहीं जाता। स्वयं को पहचानने की कुन्जी है आपके पास, संताप से दूर रहने की जादुई छड़ी है आपके पास, उदासी को मुस्कराहट में बदलने की अद्भूत विधि है आपके पास। आपके जीवन का हर पन्ना, आपकी बताई हर बात इतनी सीधी, सरल, आसान है जिस पर चलकर सुखों का मानसरोवर प्राप्त किया जा सकता है।

ऐसे अध्यात्म से भरे जीवन को उद्गारों में कहना आसान नहीं। अपितु संभव ही नहीं आपके अमृतमय जीवन की गुणगाथा धरती, अम्बर, सुर, इन्द्र, महेन्द्र, नर-नारी गाने मैं कैसे समर्थ हो सकते है। तप से आपने अपने को कुन्दन बना लिया इसीलिए तपसूर्य कहलाये, धर्म सूर्य कहलाये। ध्यान मौन में जब आप होते हैं आपकी अर्न्तछवि के दर्शन होते है। आपके भीतर आनंद, उत्सव, शाांति और प्रेम के दर्शन होते हैं।

आचार्य भगवन युग दृष्टा है। आपकी जीवन शैली हमारे जीवन निर्माण और युग निर्माण की सशक्त पहल करती है। अंधेरे में भटकते हुए राहगीर को ध्यान-साधना एवं पावन देशना से दीये की रोशनी प्रदान करती है। आपके जन्म जयन्ती के परम अवसर पर हम यही अभ्यर्थना प्रार्थना करते हैं। आपका साया आपकी छाया, प्राणी मात्र को आनंदित करती रहे।

धरती सबं कागज करू लेखनी करू वनराय,
सात समुद्र की स्याही करू शिवगुण लिखे ना जाय।

दिग् दिगन्त में आपके यशस्वी जीवन की गुण गाथा गूंजती रहे।

देश में अहिंसा और शांति की पुर्न-स्थापना कर रहे हैं आचार्यश्री भगवन्

- **नेमनाथ जैन,** निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

जीवन के अच्छे-बुरे हर दौर में मेरी प्रेरणा बने जैन साधु-संत। जिनसे मैंने सीखा है धनोपार्जन बुराई नहीं है, धन से आसक्ति बुराई है। जो कमाओ उसका एक अंश धर्म और समाज के लिए खर्च करो। इन्हीं संस्कारों के कारण मैं और मेरा परिवार जैन साधु-संतों की सेवा को अपना परम सौभाग्य मानता है। इन्ही संस्कारों के कारण मैं जैन कान्फ्रेंस से जुड़ा। यूँ तो सभी जैन साधु-संतों का मुझे और परम स्नेह मिला। लेकिन सबसे ज्यादा स्नेह शिवाचार्यजी का प्राप्त हुआ।

पूज्य आचार्य डॉ. श्री शिवाचार्यजी म. तो हैं ही उदारमना। उनसे तो हमें अपार स्नेह और कृपा मिली है। मुझे याद है कि श्रमण संघ के आचार्य बनने के पहले सन् 1986 में पूणे जाते हुए आप इंदौर आए थे। आप तब हमारे घर भी पधारे थे। आपके संस्कार, शिक्षा, विजन और मिशन (भगवान महावीर की साधना की खोज) ने मुझे प्रभावित किया था। मैंने आपमें श्रमण संघ के आचार्य बनने की सम्भावना देख ली थी। यही हुआ आप पहले युवाचार्य और फिर आचार्य बने।

पूज्य शिवाचार्यजी ने श्रमण संघ के अनुशासित संचालन के साथ जैन कान्फ्रेंस को भी संयमित और मर्यादित व्यवहार के लिए जिस निरपेक्ष भाव से तैयार किया है इसकी एक झलक हम सबने मार्च 2015 इन्दौर में आयोजित साधु-सम्मेलन में प्रत्यक्ष देखी। इस अवसर पर 500 से ज्यादा साधु-साध्वी, लाखों श्रावक-श्राविका/राजनेता/ सेलिब्रिटी ने एक स्वर में कहा कि परमार्थ के लिए भूतल पर अवतरित हुए है- पूज्य शिवाचार्यजी। उनके नेतृत्व में जैन धर्मावलम्बी समाज और देश में अहिंसा और शांति की पुर्न-स्थापना कर रहे है और करते रहेंगे।

भगवान महावीर से प्रार्थना है कि परम पूज्य शिवाचार्यजी दीर्घायु हो और स्वस्थ रहें। उनका 'आत्म-ध्यान अभियान' विश्वव्यापी बने। ✧✧

जन जन के भंडारी को मेरा बारम्बार वंदन नमन्

जहाँ श्रीहरि का आगमन हुआ उसे हरियाणा कहते हैं। वहीं भूमि जहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का संदेश देकर कर्म करने का कर्त्तव्य निभाने का पाठ पढ़ाया।

उसी धरा पर जन्म लेने वाले श्रमण संघ के 'पदम' उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. का भारतीय संस्कृति के महान मुनियों में एक उच्च स्थान है। हरियाणा के एक छोटे-से गांव हलालपुर में जन्मे एक साधारण-से बालक ने अपने असाधारण आचार-विचार और व्यवहार से अपने व्यक्तित्व को इतना विराट बनाया कि भारत ही नहीं विदेशों में भी उनके ज्ञान के सागर, पुष्प की महक फैल रही है।

ज्ञान के भण्डार गुरुवर को मेरा बारम्बार प्रणाम।

- लादुलाल बाफना जैन, मंत्री जीवन प्रकाश योजना

आचार्यश्री का इंदौर वर्षावास संतों का त्रिवेणी संगम

- **रमेश भण्डारी,** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आचार्य भगवन के प्रति अपनी भावना व्यक्त करने का सुअवसर मिला। जी हाँ श्रमण संघ के युगप्रधान आत्मध्यानी आचार्य सम्राट पूज्यवर डॉ. शिवमुनिजी म. को हम **'भगवन'** पुकारते है जिन्हें हम हृदय से भी भगवन के समतुल्य मानते है तथा ऐसे व्यक्तित्व और कृतित्व को सहजने जैसी समझ मेरे पास नहीं है। शब्द भी नहीं है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि जो मैं नहीं कह पाऊँगा उसे आचार्य भगवन समझ जाएंगे।

साधु-सम्मेलन-2015, इन्दौर से मैं शुरुआत करता हूँ। इस सम्मेलन की संकल्पना आदरणीय श्री नेमनाथजी जैन एवं हमारी टीम ने संजोयी थी। हम सब चाहते थे कि यह सम्मेलन ऐतिहासिक हो और संपूर्ण श्रमण संघ में यह संदेश पहुँचे - **"एक संघ, एक आचार्य और एक समाचारी हो"**। साधु सम्मेलन से पूरे हिन्दुस्तान में हमारी एक नयी पहचान बनी। इसके लिए सन् 2015 में मैं हर उस स्थान पर गया जहाँ हमारे श्रमण संघ के मुनिराज विराजित थे। लगभग 1000 साधु-साध्वियों से मिला और 2015 के साधु-सम्मेलन में इन्दौर पधारने की विनती की। मुझे संतोष है कि मैं श्रमण संघ के आचार्य श्री डॉ. शिवमुनिजी म. तथा अन्य मुनिजन, अपने मार्गदर्शक श्री नेमनाथजी जैन और अन्य सभी समस्त सहयोगियों की अपेक्षाओं को पूरी कर पाया। इस साधु-सम्मेलन के समापन पर जब आचार्यश्री ने हम सबकी पीठ थपथपाई तो पता ही नहीं चला कि महीनों की थकान क्षणमात्र में कहाँ गुम हो गई। इन्दौर वर्षावास-2017 का बीजारोपण भी इस साधु-सम्मेलन में हो गया था। इन्दौर के श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघों और आदरणीय श्री नेमनाथजी जैन के सान्निध्य में एक बार फिर संकल्प लिया था कि सन् 2017 में पूज्य शिवाचार्यजी का चातुर्मास इन्दौर में हो। आचार्यश्री के भीलवाड़ा चातुर्मास 2016 के समय हम सब इस मंशा से पहुँचे कि हमें इन्दौर चातुर्मास मिले। अन्य शहरों के संघ भी अपने शहरों में चातुर्मास चाहते थे। वहाँ हमने देखा कि उदयपुर के श्रावक हमसे ज्यादा प्रभावी ढंग से अपना आग्रह प्रस्तुत कर रहे है और सन 2017 का वर्षावास प्राप्त करनें में कोई कसर नहीं छोडेंगे। मैंने अपने सहयोगियों से परामर्श किया और हमने तय किया कि हमें किसी भी कीमत पर चातुर्मास इन्दौर कराना है। इसी तारतम्य में मैंने संघ के अध्यक्ष लाला नेमनाथजी को फोन किया कि आप तत्काल भीलवाड़ा के लिए निकले ताकि हमें चातुर्मास मिल सके। लालाजी की उम्र 86 वर्ष है वे अस्वस्थ रहते हैं परन्तु मैने उनसे आग्रह किया कि आपको आज ही 17 सितम्बर को निकलना पड़ेगा नही तो यह चातुर्मास हमें मिलने की उम्मीद नहीं रहेगी। आदरणीय नेमनाथजी के नजदीकी जानते है कि उनका जीवन का मंत्र है कि सकारात्मक जिद करो और जीतो। लगभग रात 9:00 बजे वे भीलवाड़ा पहुँचे। आचार्यश्री विश्राम के लिए जाने वाले थे। आचार्यश्री ने हमको देखा तो बोले कि लालाजी को जिसने बुलाया उसने ब्राह्मस्त्र उठाया। यह संकेत मेरी तरफ था। अगले दिन सुबह मंच से जब सारे संघ चातुर्मास की मांग कर रहे थे तब इन्दौर की और से मैंने कहा- "आचार्य भगवन, भागीरथ ने शिवजी की आराधना की तो पृथ्वी पर गंगा अवतरित हुई थी। हमारे संघ के अध्यक्ष लाला

नेमनाथजी की चाह है कि उनके जीवन काल में इन्दौर चातुर्मास हो, आज फिर एक भागीरथ जिसकी उम्र 86 वर्ष है आपसे कुछ मांग रहा है। मुझे वह पल आज भी याद है यह कहते हुए जब मैंने आचार्यश्री को प्रणाम किया तो उनके चेहरे की मुसकान कह रही थी कि यह इमोशनल ब्लेकमेल है अब इसे कुछ भी कहें। हमें चातुर्मास मिल गया। भीलवाड़ा से लौटते समय हमनें तय किया कि इन्दौर चातुर्मास भी साधु-सम्मेलन के जैसे ही ऐतिहासिक होगा।

आचार्य श्री और आदि ठाणा-12 के चातुर्मास की व्यवस्था जुटाना भी अपने आप में किसी भागीरथ तपस्या से कम नहीं मानते है। मैं इनमें से केवल यहाँ स्थान चयन का ही जिक्र करुँगा। चातुर्मास के लिए साफ-स्वच्छ भवन, प्रवचन और ध्यान स्थल की खोज करते हुए हम किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पाए थे तो श्री अचलजी चौधरी ने सुझाव दिया कि लोकेशन और सुविधा के नजरिए से अभय प्रशाल सबसे उपयुक्त है। हम श्री अभयजी छजलानी के पास पहुँचे तो उन्होने कहा मैंने ऐसे और इतने लम्बे समय तक किसी भी धार्मिक या सामाजिक आयोजन के लिए आज तक अनुमति नहीं दी। ऐसा करुँगा तो परम्परा बन जायेगी। वे सहमत नहीं हो रहे थे। हमने उनसे आग्रहपूर्वक कहा कि चार माह तक यहाँ संतों का प्रवास होगा, प्रवचन होगा, ध्यान साधना शिविर लगेंगे, लाखों आस्थावान परिवार आएँगे-जायेंगे, कितनी पॉजिटिव एनर्जी रिलीज और रिचार्ज होगी। अभय प्रशाल का ऐसा सकारात्मक उपयोग आज तक नहीं हुआ। अब शुरूआत करें और हमें अनुमति प्रदान करें। इसके बाद अभयजी के पास ऐसा कोई विकल्प नहीं बचा। उन्हें हार्दिक धन्यवाद। यह चातुर्मास असाधारण कैसे हो इस पर चिंतन करते हुए सुझाव आया कि युवाचार्य श्री महेंन्द्रऋषिजी म. और श्रमण संघीय प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी म. का भी यहीं वर्षावास हो तो संतों का त्रिवेणी संगम हमारे इन्दौर में हो जाएगा। युवाचार्य जी उस समय बैंगलोर चातुर्मास कर रहे थे। हम आचार्य श्री से अनुमति लेने के बाद बैंगलोर पहुँचे तो वहां के संघ संचालको ने कहा कि दक्षिण भारत की परम्परा है कि यहाँ पधारे संत-मुनिराज यहाँ के तीन राज्यों में विहार करने के बाद ही लौटते है और संतों को भी सुविधाजनक होता है। यह मांग उपयुक्त नहीं है यह सुनकर हम चुप हो गये। सहसा युवाचार्यजी बोले आचार्य श्री का आदेश है तो मैं 2000 कि. मी. की पदयात्रा करुगा। दक्षिण भारत की इस परम्परा को तोड़कर 2000 कि. मी. पदयात्रा करके युवाचार्यजी इन्दौर पहुँचे। ऐसी ही अनुमति प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी म. से मिली और आचार्यश्री का इन्दौर वर्षावास **"त्रिवेणी चातुर्मास"** हो गया है यानि भव्यातिभव्य आयोजन जिसमें हमें श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनिजी म., सहमंत्री पू. श्री शुभममुनिजी म., पू.श्री शमितमुनिजी म., पू.श्री हितेन्द्रऋषिजी म., पू. श्री निशांतमुनिजी म., पू.श्री दर्शनमुनिजी म., पू.श्री शाश्वतमुनिजी म., पू.श्री शुद्धेशमुनिजी म. और पू. श्री शौर्यमुनिजी म. का भी सान्निध्य मिला है। आचार्य भगवन है भी इतने ही विशाल हृदय उनके व्यक्तित्व में अद्भुत सरलता है तो उनके व्यवहार में नैसर्गिक सहजता, शंका आशंका यानि उहापोह की सारी हदें वे पार कर चुके है और सीधी लाईन खींचते है। कम से कम शब्दों में स्पष्टवादिता उनका स्वभाव है तो वे पलक झपकते ही निर्णय लेते है सबकी सुनते है और वही कहते है और करते है जो सबके लिए सुविधाजनक हो और जिससे जैन परम्परा का उल्लंघन भी न हो। जब कभी भी संघ के थके मांदे पदाधिकारी या कार्यकर्ता उनके

पास पहुँचते है तो उनकी एक थप्पी सारी थकान को मिटाकर बैटरी रिचार्ज कर देती है। इन्दौर चातुर्मास में आत्म ध्यान शिविर और उनमें शामिल होने वाले साधकों का भी कीर्तिमान बन गया है। आत्मध्यान साधक कहते है कि आचार्यश्री और शिरीषमुनिजी म.के सान्निध्य में साधना करके उनका धर्म से साक्षात्कार हुआ है। जीवने जीने का तरीका आमूल बदल गया है। जिसने भी आत्मध्यान किया है अब वे सकारात्मक सोचते है खुश रहते है और खुशी बांटते है।

मैं इस चातुर्मास की विशेषता के अनेक प्रसंग हमारे सामने उपस्थित हुए है जहां एक तरफ धर्म साधना और तपस्या के माध्यम से संपूर्ण समाज ने आहूति दी है जो कि अविस्मरणीय है। चातुर्मास काल में अनेक संघों के लोगों का पधारना हमारे लिए हर्ष और गौरव का विषय रहा। आचार्य भगवन करुणा और दया के सागर है दुःखी दर्दी के लिए सदैव उनके मन में करुणा के स्त्रोत बहते रहते है कोई भी ऐसा व्यक्ति अगर उनके निकट आया होगा तो उसे यथा योग्य संघ के द्वारा सहयोग की प्रेरणा देकर विदा किया होगा। यह अविस्मरणीय क्षण हमारे जीवन को एक नई ऊँचाई की ओर ले जाने जैसा है। मैं एक और प्रसंग से अपनी बात का समापन करुँगा कि संतों की सेवा का प्रतिफल तत्काल मिलता है। हमें भी शिवाचार्यजी भगवन की प्रेरणा से इन्दौर में श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज के लिए एक कीमती भूखण्ड, जो कि जैन दिवाकर विद्या निकेतन के स्वामित्व का न्यू पलासिया में स्थित है और जिसकी अध्यक्षा आदरणीय श्रीमती भुवनेश्वरीजी देवी भंडारी है, इस संबंध में हमने आचार्यश्री से विनती की कि यह भूखण्ड वे इन्दौर के श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज को सार्वजनिक भवन बनाने के लिए अर्पित कर दें, शिवाचार्यजी की प्रेरणा से आ. श्रीमती भुवनेश्वरीजी देवी भंडारी ने 70-80 हजार वर्ग फीट जमीन इस प्रयोजन के लिए प्रदान करने की घोषणा की। उनकी इस उदारता के लिए उनका हार्दिक आभार एवं साधुवाद। आचार्य भगवन का इन्दौर वर्षावास के इस उपहार से इन्दौर का सकल स्थानकवासी श्वेताम्बर जैन समाज अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

मैं आ. श्री नेमनाथजी जैन और अपने सभी सहयोगियों का हृदय से आभारी हूँ कि उन्होनें इस वर्षावास आयोजन महासमिति के महामंत्री का दायित्व मुझे सौंपा। मुझे विश्वास है कि आचार्य भगवन की कृपा से मैं आपकी अपेक्षाओं को पूरा कर सकूँगा। आप सबके ऐसे ही स्नेहाषीश का अभिलाषी। जय जिनेन्द्र!!

✧✧

प्रेम शब्द सिर्फ ढ़ाई अक्षर का होता है, लेकिन इसमें विश्व शांति, विश्व की स्मृद्धि, विश्व का कल्याण करने की ताकत है। आप प्रेम शब्द की ताकत समझें, दो बोल प्रेम के बोल के तो देखें, सामने वाले की दृष्टि बदल जायेगी। प्रेम से विनय, विवेक समर्पण भाव आते हैं। प्रेम से हम सभी को जोड़ सकते है, गलत बोलकर हम सभी को तोड़ सकते हैं। सर्वनाश का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। प्रेम से बोले दुनिया में बदलाव देखो।

- आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनि म.

(GST) वस्तु एवं सेवा कर- क्या है? कम्पोजिशन स्कीम तथा रिवर्स चार्ज मैकेनिजम?

डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, सीए
अध्यक्ष - प्रत्यक्ष कर समिति महाराष्ट्र चेंबर्स ऑफ कामर्स, मुंबई

छोटे व्यापारी जिनका टर्न ओवर यानि व्यापार (सेल्स) बीस लाख रुपये से कम है, उन्हें रजिस्टर्ड होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन ऐसे अनोदित (Unregistered) व्यापारियों से माल खरीदेगा कौन? क्योंकि अनोदित व्यापारी से माल लेने वाले को इनपुट क्रेडिट (IST) नहीं मिलेगा, क्योंकि वह टैक्स भरने वाला नहीं, कारण वह टैक्स लगा नहीं सकता, आप किसी यूआरडी (URD) से माल खरीदी करते हो तो रिवर्स मैकेनिजम लागू हो जायेगा। क्या है यह रिवर्स मैकनिजम?

रिवर्स मैकेनिजम एक नया प्रावधान है, यदि आप किसी अनोंदित (URD) व्यापारी से माल खरीदी करते हो तो उस अनोदित व्यापारी को नहीं बल्कि आपको याने खरीदने वाले व्यापारी को उस पर टैक्स देना है। क्योंकि URD व्यापारी टैक्स नहीं लगा सकता। मतलब ऐसा समझना है कि आप ही आपसे माल खरीदी कर रहे हो और जो टैक्स माल बेचने वालो को भरना था वह आपको भरना है, क्योंकि आप रजिस्टर्ड है और वह बेचने वाला अनरजिस्टर्ड है। मतलब अब कोई कंपनी व्यापारी जीएसटी में रजिस्टर्ड है और वह छोटे-छोटे वस्तु या सेवा URD व्यक्ति से लेगी तो उसे विवर्स चार्जेस के अंतर्गत टैक्स भरना होगा। इस जीएसटी के अंतर्गत यानि आपने URD से माल खरीदा तो कई सुविधाओं से आप वंचित हो जाओगे। इसलिए छोटे व्यपारी को भी जिनका व्यापार बीस लाख रुपये से अंदर है, उन्हें अगर दूसरे व्यापारी को माल बेचना है तो उसे व्यापार कम होने के बावजूद भी जीएसटी के तहत रजिस्ट्रेशन करवाना पड़ेगा। तो ही उसका व्यापार बढ़ सकता है। हाँ, जो व्यापारी सिर्फ उपभोक्ताओं को माल बेचते हैं, जिन अंतिम उपभोक्ताओं को इनपुट क्रेडिट लेना ही नहीं है, उन व्यापारियों को जीएसटी का रजिस्ट्रेशन करने की ज़रुरत नहीं है क्योंकि उनसे कोई रजिस्टर्ड व्यापारी माल लेने वाला नहीं है, जेसे किराणा, पान वाला, कपड़े वाला छोटा व्यापारी जो उपभोक्ताओं को ही माल बेचेगा।

कम्पोजिशन स्किम याने आपका टर्न ओवर या व्यापार 75 लाख रुपये तक है, तो आप 1% (o.5 CGST + .05 SGST) ट्रेडर के केस में और 2% (1.00 CGST + 1.00 SGST) उत्पादक के केस में टैक्स देकर कम्पोजीशन लेव्ही स्कीम में रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। जिसमें आपको कोई रेकार्ड रखना नहीं है। (सर्विस देने वालों को यह स्कीम लागू नहीं है) सिर्फ रेस्टोरेंट /केटरर को सर्विस व्यवसाय मानते हुए भी उनको यह स्कीम लागू हैं, उनको 5% (2.5 % CGST + 2.5% SGST) टैक्स लगेगा। मेरी कम्पनी वालों को यह सलाह है कि आपके कैन्टीन कैन्ट्रक्टर को GST के अंदर रजिस्ट्रेशन करने को कहो और 5% GST देकर भारी टैक्स से राहत पाओं।

कम्पोजिशन स्कीम का उद्देश्य छोटे व्यापारियों की रिटर्न के जो प्रावधान है उससे राहत देना। मतलब मासिक विवरण पत्र भरने के बजाय क्वार्टली (तिमाही) विवरण पत्र इस कम्पोजीशन वाले व्यापारियों को भरना पड़ेगा। आपको आपके बिल के ऊपर तथा दुकान के बाहर साईन बोर्ड पर यह लिखना होगा कि 'हम

कम्पोजिशन स्कीम के व्यापारी हैं। और Invoice Bill में टैक्स अलग नहीं लगाना है। कम्पोजिशन स्कीम के व्यापारी अपना माल अन्य प्रदेशों में राज्यों में बेच नहीं सकते, उसी प्रदेश में माल बेचना है जहां आप रजिस्टर्ड हो। आप किसी अनरजिस्टर्ड डीलर से माल खरीदी कर नहीं सकते, नहीं तो आप रिव्हर्स चार्ज में आओगे और आपको टैक्स भरना पड़ेगा। कम्पोजीशन का उल्लंघन होगा। कम्पोजिशन वाले व्यापारी से कोई भी माल लिया तो उसे इनपुट टैक्स क्रेडिट मिलेगा ही नही।

साल के बीच में किसी बात का उल्लंघन होगा तो कम्पोजीशन स्कीम समाप्त और आप रेग्युलर GST व्यापारी की तरह पुराने और नए विक्री पर (सेल्स) पर टैक्स भरो, नहीं तो परेशानियों का सामना करो। यदि कोई व्यापारी कम्पोजीशन छोड़कर नॉर्मल में आना चाहता है तो वह आ सकता है तो उसे उसके स्टॉक पर जिस दिन से नार्मल रजि. को अपनाया है, उस दिन के एक दिन पहले जो स्टॉक था उस पर इनपुट क्रेडिट मिलेगी। लेकिन अगर उल्टा हो गया, यानि रेग्युलर GST वाले व्यापारी ने कम्पोजिशन स्कीम को अपनाया तो उसकी क्लोजिंग स्टॉक पर भी इनपुट क्रेडिट डूब जायेगी।

सारांश यह है कि व्यापार में तरक्की करनी है तो छोटे व्यापारी क्यों न हो? GST रजिस्ट्रेशन कराओ, साधारण व्यापारियों की तरह हर महीने विवरण पत्र भरो, तो ही अन्य नोंदित व्यापारी आपसे माल खरीदी करने के लिए तैयार होंगे और आपका व्यापार बढ़ेगा, आपकी तरक्की होगी और आप न केवल 20 लाख का, बल्कि 75 लाख का भी लिमिट क्रॉस करोगे। ✧✧

परिवार का मतलब क्या है?

Family (परिवार) का मतलब क्या है?

Family (परिवार) का मतलब है:- F= Father, A, And Mother, I = I; L=Love; Y=You जिसे घर में छोटे-छोटे बच्चे को प्रणाम करते हैं, बड़े छोटों को 'जय जिनेन्द्र' कहते हुए सम्मान देते है, भाई-भाई एक थाली में बैठकर भोजन करते हैं, सास-बहू एक साथ धर्म स्थानक में जाते हैं, देवरानी-जेठानी हिल-मिलकर आनंद के साथ रहती हैं, वह घर सुन्दर, Happy Home है।

सात वार मिलने से सप्ताह बनता है। जहाँ पर सारे लोग मिल जुलकर रहते हैं वह 'परिवार'। विश्व से पहले परिवार से प्रेम करना चाहिए। रिश्ते बड़े प्यारे और मीठे हुआ करते हैं, पर आज कल रिश्तों में कटुता आ रही है। घर-घर में 'महाभारत' का वातावरण बनता जा रहा है। रिश्तों के टूटने के कारण, मन और वाणी की कटुता, धन का स्वार्थ, बड़ा होने का 'EGO', छोटी-छोटी बातों को मन में गाँठ बना लेने से रिश्तों में दरारें आ रही हैं।

अतः बेटे-बहुओं को चाहिए कि वे अपने बूढ़े माँ-बाप की कड़वी बातों को समभावपूर्वक सहन करें। परिवार की खुशियाली के लिए सास-बहु अर्थात् माँ-बेटी को आपस में तालमेल रखना जरुरी है। सास-बहु पर टॉनटिंग ना करें, उसकी गलती को सुधारने का प्रयास करें और बहू सास को सम्मान दे तथा हर कार्य पूछकर करे।

साभार - आनंद नवकार परिवार

शिवाचार्य श्रीजी का हार्दिक अभिनंदन

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर,
आचार्य शिव मुनि जी महान है।
संघ संगठन के सजग प्रहरी
गौरवशाली संघ की शान है।
भारत की माटी के महकते चंदन हैं,
आचार्य आत्माराम जी के पौत्र शिष्य हैं।
जिन शासन के गौरव महापुरुष,
आपका बारम्बार अभिनंदन है।
आप ध्यान योगी एवं महान चिंतक,
भक्तों को कराते हैं उत्तम ध्यान।
बताते हैं आगम का सार देते हैं,
अनुपम ज्ञान आपकी सहज
मुस्कान से हो जाते हैं भक्त निहाल।
आप कर रहे हैं लगातार तपस्या,
जिनशासन की कर रहे हैं प्रभावना,
वर्षीतप करके कर रहे हैं कर्म निर्जरा,
ऐसे तप सूर्य की हम करते हैं अभिवंदना।
आप शासन के सिरताज हैं,
ऐसे युगप्रधान आचार्य पर हमे नाज है
आपके दर्शन से भक्त सोया भाग्य जगाते है,
आपके पावन चरणों में हम शीश झुकाते हैं
आपको जन्म दिवस की देते हैं हार्दिक बधाई,
आप युग-युग जिये, संघ पर बना रहे आर्शीवाद,
जिनेश्वर देव से हम यही मंगल प्रार्थना करते हैं।।

– देशबंधु हिंगड जैन
पूर्व राष्ट्रीय मंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

दशपुर की माटी में हमारे गुरुवर

सन् 2017 के चातुर्मास में गुरुदेव वरिष्ठ उपाध्याय श्री मूलमुनि जी म. के गुणगान कर पाना बड़ा ही कठिन काम हैं। जिस दिव्य विभूति की चर्चा में कर रहा हूँ वह व्यक्तित्व भी ऐसा ही है, जिनकी वाणी बिना बोले ही हृदय को छू लेती है यही आपकी विशेषता हैं। दशपुर, मंदसौर की माटी में गुरुवर का जन्मदिन था उस दिन मेरे मन में आज के साहित्य शिरोमणी को इस भावना के साथ जनभेदी को देखते हुए मेरे में ये भाव जाग उठें। आपका जीवन भोर की पहली किरण की तरह उज्जवल-उज्जवल।

संघ एकता के लिए हमेशा
कदम उठे आपके मुनिवर ।।
आपके ज्ञान, दर्शन, चारित्र,
और तप जिसमें महकती स्वच्छ सुवास।
आपकी दया, करूणा और धर्म-ध्यान
से सुखी बने सारे जगत के प्राणी।।
मूलमुनि जी के जब हुए बरसों बाद
दर्शन मानों धन्य हो गए मेरे नयन।
आनन्द से भर उठा मेरा मन
आपके सरल सुलभ हृदय से।।
जन-जन के प्राण में बसते है
गुरु मूल मुनि ऋषिवर।
आप है चारित्र चूड़ामणी समय के
सजग पहरी सुमेरू के पर्वत।।

क्या करूँ आपके व्यक्तित्व का मैं बखान गुरूवर। क्या इतने बड़े वरिश्ठ उपाध्याय होते है इतने सरल, सम्मोहित होते सभी श्रावक-श्राविकाएँ आपके असीम स्नेह में, आपको वंदन करता हूँ शीश नवाता हूँ बारम्बार गुरूवर।।

– समीरमल मारु जैन
मंदसौर, मध्य प्रदेश

आगम-स्वाध्याय की महिमा

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

संसार में बहुत सारी चीज़ों का अपरम्पार ज्ञान उपलब्ध है। ज्ञान की अनेक शाखाएँ और उप-शाखाएँ हैं। अगणित विद्याएँ और कलाएँ हैं। इन सबमें मनुष्य जीवन के लिए आत्मज्ञान, आत्मविद्या और धर्मकला की विशेष महत्ता है। ऐसा इसलिए है कि आत्मविद्या सिर्फ इस जीवन तक सीमित नहीं है। आत्मविद्या अनन्त जीवन तक विस्तृत है। आत्मविद्या स्व और पर, सबके लिए सदैव हितकारी है। आत्मविद्या से अन्य विद्याओं को नया अर्थ मिलता है। आत्मविद्या अनन्त जीवन को परिमित करती है तथा इस जीवन को अपरिमित आयाम देती है। जैन आगम आत्मविद्या का सर्वोत्तम साहित्य है।

आगम-साहित्य मूलतः आत्मा से जुड़ा हुआ है। इसलिए यह आस्था से भी जुड़ा है। अनगिनत श्रद्धालुओं और साधकों ने आगमों का स्वाध्याय करके अपने जीवन में नई दिशा, नई ऊर्जा और नई रोशनी पाई है। विभिन्न आगमों पर मनीषियों और साधकों ने काफी विचार-विमर्श किया, लिखा और बोला है। कहीं-कहीं उनकी व्याख्याओं और कथन शैलियों में अन्तर भी है। इस अन्तर को जैन दर्शन की नय दृष्टि तथा आगमों की बहुआयामिता कहा जा सकता है। व्याख्या-भेद और शैली-भेद के बावजूद आत्मशुद्धि और वीतरागता का सन्देश सर्वत्र व्याप्त है।

आगमों के स्वाध्याय में राग-त्याग की प्रबल प्रेरणा मिलती है। आचार्य पू. श्री हेमचन्द्र ने राग के तीन प्रकार बताये हैं- स्नेह राग, विषय राग और दृष्टि राग। स्नेह राग वह है जो अपनों, अपने परिजनों, रिश्तेदारों आदि के प्रति होता है। इन्द्रिय विषयों और विभिन्न कामनाओं के प्रति राग को विषय राग कहा जाता है। दृष्टि राग वह है, जो परम्परा, गुरु, पंथ और दृष्टि के प्रति होता है। स्नेह राग और विषय राग छोड़कर अनेक व्यक्ति संयम का मार्ग अपना लेते हैं और संत-महात्मा, पण्डित या उपदेशक बन जाते हैं। लेकिन, दृष्टि राग छोड़ना अनेक महात्माओं के लिए भी कठिनतर होता है। स्नेह राग और विषय राग से उत्पन्न परेशानियाँ वैयक्तिक जीवन में खलबली मचाती है। दृष्टि राग से उत्पन्न स्थिति सामुदायिक और संघीय जीवन में सौहार्द घटाती है। दृष्टि राग घटने से सत्य का मार्ग अधिक आसान हो जाता है तथा सत्य का अनुसंधान व्यापक, बहुपक्षीय व समृद्ध बनता है। वस्तुतः वीतरागता की साधना और लक्ष्य के लिए सभी प्रकार के राग का त्याग अनिवार्य बताया गया है।

राग-त्याग से आध्यात्मिक साधना उच्चतर और अनुत्तर बनती है। अध्यात्म की साधना हमें भेद से अभेद की ओर ले जाती है। जैन दर्शन का एक महत्वपूर्ण संदेश है- भेद से अभेद की ओर बढ़ना। यह संदेश अपने सिद्धान्त और व्यवहार, दोनों ही रुपों में अपनाने से लाभ ही लाभ है। यह संदेश आगम-स्वाध्याय की निश्पत्ति भी है। व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा और समझा जाए तो पता चलेगा कि आगम हमारे जीवन के शास्त्र हैं। ये हमें कदम-कदम पर समाधान देते हैं और निरापद राह सुझाते हैं। अतः आगमों का स्वाध्याय हमारे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, संघीय और आध्यात्मिक जीवन को अधिक सुलझा हुआ, नीतिमय, मैत्रीपूर्ण तथा सजग बनाने में सक्षम है। यह समझ और सजगता इस जीवन

को सुखमय बनाती है और परम ध्येय मोक्ष की साधना में सहायक बनती है।

जैन दर्शन की अनेकान्तमय सम्यक् दृष्टि एवं किसी एक शास्त्र का व्यापक अर्थ समझने के लिए अन्य आगमों का स्वाध्याय भी मार्गदर्शक बनता है। यह गौरवशाली तथ्य है कि जैन परम्परा के पास एक से बढ़कर एक, अनेक आगम-शास्त्र हैं। यह पूर्वाचार्यों और विद्वानों की सतत व व्यापक ज्ञान-साधना का उत्तम प्रमाण है। विभिन्न आगमों के स्वाध्याय से आत्मज्ञान, तत्त्वज्ञान, दर्शन, ध्यान, योग, जीव, जगत, व्यवहार आदि बहुत सारे विषयों के सामान्य और विशेष अर्थ-भावार्थ जानने-समझने को मिलते हैं। सतत स्वाध्याय साधक की ज्ञान-पिपासा को शान्त करने की बजाय, उसे जगा देता है और बढ़ा देता है।

वस्तुतः शास्त्र, ज्ञान नहीं है। शास्त्र तो हमारे अप्रकट ज्ञान को प्रकट करने का माध्यम मात्र है। अतः किसी भी शास्त्र के स्वाध्याय के साथ ज्ञान-पिपासा बढ़नी ही चाहिये। स्वाध्याय यानी स्व का अध्ययन इतना सरल नहीं है कि वह पुस्तक बाँचने या गाथाओं को कण्ठस्थ कर लेने मात्र से पूरा हो जाए। ज्ञान-साधना में आगे बढ़ने पर ही साधक को अपनी अल्पज्ञता का पता चलता है। मेरी चार काव्य-पंक्तियाँ हैं –

अज्ञात के महासमुद्र में बस एक बिन्दु ज्ञात है।
सत्य के सन्धान की सबसे बड़ी यह बात है।
सच्चाई है कि हम अभी अत्यन्त ही अल्पज्ञ हैं।
अज्ञान के कारण ही खुद को मान बैठे विज्ञ हैं।।

सम्यग्ज्ञान की साधना का पुरुषार्थ साधक को अनासक्ति और आत्मध्यान की ओर ले जाने में सहायक बनता है। वैसा आत्मध्यान; आत्मज्ञान का स्पर्श कराता है, आत्मानुभव कराता है। उस स्थिति में साधक को अपने स्वरूप का भान व ज्ञान होता है। साधक को लगता है कि आत्मा अलग है और शरीर अलग है। आत्मा अविनाशी है और देह विनाशी है। आत्मा चैतन्य स्वरुप और अनन्त ज्ञान-दर्शन सम्पन्न है। अस्तित्वगत शाश्वत सत्य की गहन अनुभूति और उपलब्धि आगमों का सार है।

✧✧

वसुधा है हमारा घर...

'वसुधा' शब्द पर गौर करें तो एक अर्थ में वसु+धा यानि जिसे अपने 'फण' पर किसी अज्ञात नाग ने धारण किया है और दूसरा 'व + 'सुधा' यानि वह बस्ती, वह जगह जहाँ सुधा, अमृत ही अमृत विद्यमान है। दोनों अर्थो में ज्यादा प्रभावी, ज्यादा ग्राह्य दूसरा अर्थ है क्योंकि वसुधा यानि धरती ही हमारा घर है और इस घर में सिर्फ हम ही रहते हो ऐसा भी नहीं है। समाज-शास्त्रियो, प्रागैतिहासकारो का मत है कि मनुष्य ने निरंतर विकास किया है। सदियों से वह क्रूरता, बर्बरता और अपने खुरदुरेपन को स्निग्ध करता चला आ रहा है।

समाज शास्त्री यह भी मानते हैं कि अहिंसा या करुणा या दया की अनुभूति उतनी ही प्राचीन है जितनी आज तक बह रही नदियाँ, ये पहाड़, ये सघन वन, ये घाटियाँ, ये झरने, ये मैदान तलहटियाँ और मुनष्य के दांतों की बनावट और उनकी प्रथम तह जो इस तथ्य की गवाह है कि मनुष्य में अहिंसा की आस्था का अमृत सदा से था और यही विचार वसुधा को 'हमारा-घर' कहलाने योग्य बनाता है। अब यह हमारा दायित्व है कि हम अपनी अहिंसा धर्मिता से इस धरती को रहने योग्य घर बनाए।

हत्यारा या मोक्षगामी

- शांति लाल नागौरी, उदयपुर (राजस्थान)

संसार में सभी प्राणी शांत भाव से जीना चाहते हैं, अकारण कोई भी व्यक्ति किसी को कष्ट नहीं देना चाहता, इसके पश्चात भी कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं कि शक्तिशाली, प्रभावशाली सत्ता के समीप रहने वाले धन, बल एवं भुजबल से सम्पन्न लोग अपनी विशिष्टताओं के कारण अपने आपको अधिक प्रभावशाली समझने लग जाते हैं। व्यक्ति प्रभावशाली तब तक नहीं होता तब तक उस पर किसी का प्रभाव न हो इस प्रभाव को जमाने के लिए वह कैसे-कैसे कार्य कर बैठता है कि अत्यंत विनम्र एवं शांत लोगों को भी अपराध जगत में प्रवेश करना पड़ जाता है। ऐसा आज से नहीं अनादिकाल से चला आ रहा है। एक घटना मात्र व्यक्ति के जीवन को किस तरह प्रभावित कर देती है इसे संभवतः कर्म सत्ता का ही प्रभाव माना जाना चाहिए। जैन आगमों में अर्जुन माली का उल्लेख आता है। अधिकांश जनमानस में यह भावना प्रचलित है कि अर्जुनमाली एक हत्यारा था, राजगृह नगरी के राजमार्ग पर उसका बड़ा आतंक था। उसके आतंक एवं खौफ से हर कोई राजमार्ग पर जाने का साहस नहीं कर पाता था। स्वयं महाराजा श्रेणिक भी विवश थे। आखिर ऐसा क्या था कि ऐसे अपराधी को कोई पकड़ नहीं पाया?

वस्तुतः अर्जुनमाली जन्मजात हत्यारा नहीं था। श्रमण भगवान महावीर के शासनकाल में राजगृही नगरी एक धर्म नगरी के रुप में विख्यात थी। 18 चातुर्मास स्वयं प्रभु ने यहां किए थे। नौ गणधर इसी राजगृही नगरी में दिवंगत हुए थे। महाराजा श्रेणिक यहाँ के राजा थे एवं जैनधर्म के उपासक थे। इसी राजगृही नगरी में अर्जुन नाम का जाति से माली अपनी भार्या बन्धुमती के साथ निवास करते थे। उनका अपना सुन्दर बगीचा था। हर तरह के पुष्पों से आच्छादित यह बाग अत्यंत रमणीक होकर जनमानस को अपनी ओर आकर्षित करता था। मुदगपाणी नामक एक यक्ष जो देव के रुप में थे, वे इस बगीचे के रक्षक के रुप में थे। अर्जुन प्रतिदिन अपनी भार्या के साथ यहां आते, देव पूजन के पश्चात पुष्प चुनते और राजगृही नगरी के बाजार मे बेचकर अपा गुजर बसर करते थे। अत्यंत सरल स्वभाव इस दम्पत्ति का जीवन हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता था।

उसी राजगृही नगरी में छः युवकों की एक ललित गोष्ठी थी, उनके कतिपय कार्यों से प्रसन्न होकर महाराजा श्रेणिक ने इन्हें अभयदान दिया। इस कारण इन युवकों की उदण्डता और अधिक बढ़ गई थी। कोई कुछ भी नहीं कर पाता था। राज स्वयं विवश थे। यह कैसी विडम्बना थी कि एक महाराजा ने अभयदान देने से पूर्व यह भी नहीं सोचा कि इसका सभी विपरीत परिणाम भी हो सकता है। राजा चाहते तो पुरस्कार से सम्मानित कर उनके अच्छे कार्यों की प्रशंसा कर सकते थे। इस अभयदान का परिणाम यह हुआ कि छः युवकों को अकाल मृत्यु का मुंह देखना पड़ा। अर्जुनमाली व्यापारी से हत्यारा बन गया और राजा श्रेणिक को भी नरकगामी बनना पड़ा।

एक बार किसी विशेष धर्मोत्सव की घोषणा राज्य द्वारा की गई, घोषणा सुन अर्जुनमाली अपनी

पत्नी के साथ पुष्प चुनने बगीचे में पहुंचा। जैसे ही वह देवता की पूजा के लिए झुका ललित गोष्ठ के उन छः युवकों ने उसे पकड़कर हाथ-पांव बांध दिए और उसकी पत्नी के साथ दुष्कर्म किया। अर्जुन ने सब कुछ अपनी आँखों से देखा उसका खून खौल उठा। जिस देवता की मैं प्रतिदिन पूजा करता हूं वह भी मेरी रक्षा करने में असमर्थ है तो यह कैसा देव? उसे अपनी पत्नी के चरित्र पर भी शंका हो गई, उसने वहां पड़ा मुदगल उठाया, देव ने सोचा यदि यह अपने प्रयास में सफल हो गया तो लोगों (प्राणियों) का विश्वास देवों से उठ जाएगा। तत्क्षण वह अर्जुनमाली के शरीर में प्रवेश कर गया और उसी मुदगल से प्रहार कर उन छः युवकों के साथ अपनी पत्नी की भी हत्या कर दी। उसक पश्चात् प्रतिदिन राजगृही नगरी के राजमार्ग पर छः पुरुष एक स्त्री (महिला) की हत्या करने लगा। मुदगलपाणी यक्ष उसके शरीर में था, अब अर्जुन साधारण पुष्प विक्रेता से एक हत्यारा बन गया। पाँच माह ग्यारह दिन में उसने 1141 पुरुष/नारी की हत्या की, जो भी सामने आया उनको मार डाला। निरापराधी भी नहीं बच सके। राजा श्रेणिक भी विवश थे, यदि उन अपराधियों को पनाह नहीं देते तो यह घटना नहीं होती।

हम जिस राजा श्रेणिक को न्यायप्रिय मानते हैं और कहा जाता है कि वे आगामी चौबीसों तीर्थंकर में प्रथम तीर्थंकर होंगे न केवल उनके पुत्र न ही उनके कोड़े लगाए एवं उन्हें नरक का सामना करना पड़ा। अर्जुन भी एक माली से हत्यारा बन गया। इस घटना के बाद निरंतर उसके जीवन में बदलाव आते गए। एक बार श्रमणोपासक सेठ सुदर्शन उसी मार्ग से प्रभु महावीर के दर्शनार्थ जाते हैं, अर्जुन का खौफ उन्हीं नहीं रोक पाता, वे निरंतर चल रहे हैं, अचानक अर्जुन हत्यारा सामने, सुदर्शन के भावों में कोई परिवर्तन नहीं, धर्म का ऐसा अनूठा प्रभाव कि देव अर्जुन के शरीर से निकल जाता है। अर्जुन निढ़ाल होकर सुदर्शन के चरणों में गिर जाता है, उनके साथ प्रभु महावीर की शरण में पहुंच जाता है, प्रभु की वाणी एवं जीवनचर्या से प्रभावित होकर अर्जुन मुनि बन जाते हैं। जैन धर्म का ऐसा अनूठा स्वरुप अन्यत्र दुर्लभ है। अब अर्जुन मुनि से किसी को डर, भय नहीं है, प्रभु के सान्निध्य में तपाराधना के साथ अपने जीवन में विशेष परिवर्तन लाते हैं। जो लोग अर्जुन के नाम से भय खाते थे वे ही आज उन्हें गौचरी के बजाय धक्के दे रहे हैं, लाठियों से पीट रहे हैं एवं तरह-तरह की यातनाएं दे रहें, क्योंकि उसने अपने निरपराध परिजनों को मार डाला, अर्जुन सब शांत भाव से सहन कर रहे हैं। **'मेरे कर्मों का फल'** कर्म सत्ता किसी को नहीं छोड़ती, हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ता है, सब कुछ शांतभाव से सहन करते हुए मुनि अर्जुन अपने कर्मों की निर्जरा करते हुए मात्र छः माह में मोक्षगामी बन जाते हैं।

एक सामान्य गृहस्थी एवं व्यवसायी से एक हत्यारा एवं हत्यारे से मुनि बनकर अर्जुन मुनि मोक्षगामी बन गए। यह एक ऐसी घटना है जो व्यक्ति को जीवन में अकारण किसी को पीड़ित नहीं करने की प्रेरणा देती है। आग की एक चिंगारी मात्र भयानक रुप ले सकती है और यही एक चिंगारी किसी के घर में उजाला भी कर सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि हम किसे अपनाएं, सोचे, विचारें, चिंतन करें।

परहित सरसि धर्म नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

✧✧

रत्नललाम नगरी के नवरत्नों में अनमोल रत्न उपा. पू.श्री प्यारचंद जी म.

- एस सी कटारिया, रतलाम (मध्य प्रदेश)

भारतवर्ष ऋषि मुनि परम्परा वाला एक धर्मनिष्ट सुसंस्कृति से परिपूर्ण महादेश रहा है, जहाँ हर युग हर काल के धर्म की ध्वजा ऊंची रही। इसी गौरवशाली परम्परा से जुड़े, जैन धर्म में भी अनेक ऐसे संत मनीषी हुए जिन्होंने विश्व को सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, परोपकार का पावन संदेश दिया। जैन श्रमणों की पावन पवित्र श्रंखला में पू. प्यारचंद जी म. का नाम बड़े गर्व के साथ पुण्यशालियों द्वारा स्मरण किया जाता है। वे सरल हृदयी, स्वध्याय-प्रिय, कठोर संयमी श्रवण संत थे। श्रमण संघीय उपाध्याय पू. श्री प्यार चंद जी म. संगठन हितैषी मृदुभाषी होकर अनुशासन प्रिय संत रत्न थे। मालवांचल के मध्य में रत्नपुरी की सज्जन सरकार के सज्जन सिंह महाराजा की नगरी रत्नललाम के सज्जन लोगों की बसावट की प्रजनन भूमि से श्रमण शिरोमणी प्यारचंद जी म. का जम्न वि. सं. 1952 में धर्मनिष्ट सुश्रावक पूनमचंद जी बोथरा व माता सुश्राविका मानवती के घर पर हुआ। पाँच वर्ष की आयु में इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। उनका लालन पोषण उनकी दादी माँ ने कठोर संघर्ष कर उनके जीवन को संवारा और सन्यास मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर एक प्रभावशाली रत्न समाज को अर्पित कर दिया।

वि. सं. 1961 फाल्गुन शुक्ल पंचमी को राजस्थान की वीरभूमि चितौड़गढ़ में प्रसिद्ध वक्ता जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल जी म. से आप दीक्षित हुए। सम्पूर्ण मुनि काल की अवधि में धर्म दीक्षा का पालन किया और भारत के विभिन्न क्षेत्रों की पदयात्रा की। आपने सैतालिस चातुर्मास दूरस्थ क्षेत्रों में किए। उनमें से दो ऐतिहासिक वर्षाकाल उनके गृहनगर रतलाम के भी हैं। आपके यशस्वी संयमी समय में पाँच सम्प्रदायों के एकीकरण के पुनीत कार्य में आपने सहयोग कर सादड़ी सम्मेलन में वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ हेतु सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। पू. उपाध्याय जी बाल ब्रह्मचारी माहमना महात्मा थे। उनमें विभिन्न गुणों का शानदार समन्वय हुआ था। प्रकृति से उदार हृदय से सरल और विचारकला वे धनी होकर साहित्य प्रणेता यश कीर्ति से दूर एक महान संत थे। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के निर्माण से ही आप अनेक पदों से विभूषित हुए। मध्य प्रदेश के प्रांत मंत्री के रुप में जो कार्य आपके निर्देश से हुए वे सराहनीय थे। मध्य प्रदेश के मुनियों के विहार मार्ग, चातुर्मास योग्य स्थल तथा सुश्राव के कहां कितने घर हैं। उसका विवरण एक परिचय पत्रिका में नक्शे सहित पहले उन्होंने समाज के सम्मुख रखा था। अपने युग के वे अत्यंत विचक्षण व्यक्ति सम्पन्न संत रत्न होकर संघ ऐक्य के सूत्रधार जैन दिवाकर जी के प्रमुख शिष्यों में आप विलक्षण प्रतिभा के धनी, बत्तीस आगमों तथा इत्तर धर्म दर्शन का ज्ञान योग्यता से प्रभावित होकर चर्तुविध संघ ने आपको 'वाणी' मध्य भारत मंत्री तथा उपाध्याय जैसे उच्च पदों से आपको अलंकृत किया। उनका अंतिम चौमासा कर्णाटक प्रांत का रायचूर था। चातुर्मास के पूर्ण होने पर वे रायचूर से गजेन्द्रगढ़ को पधारे अभी यहाँ उनके पाँच व्याख्यान ही हुए थे कि हृदय रोग ने उनको घेर लिया। दिनांक 08.01.1960 पौष शुक्ला दशमी को वे अरिहंत का निनिर्मेव रुप से स्मरण करते हुए इस नश्वर शरीर का त्यागकर संथारे की निर्मल रीति सीजौते हुए गजेन्द्रगढ़ में देवलोक गमन हो गए। आपका बहुमुखीय व्यक्तित्व सुसाहित्य संग्रह जैन जगत में दीर्घकाल तक याद किया जायेगा। ऐसे संत प्रवर श्री के चरणविंद में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए पुनः वंदन एवं नमन्।

✧✧

सजगता से मन की स्वस्थता

- अशोक खिंवसरा कोठारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

लम्बे अंतराल के पश्चात् आज पुनः उसी बगीचे में पहुंचा तो देखा कि पौधों पर बड़े-बड़े ढ़ेर सारे गुलाब खिले है और प्रातः के सुनहरे प्रकाश में लहलहा रहे हैं। उनकी मुस्कुराहट, महक तथा उनकी अद्भुत सुन्दरता से पूरा परिवेश महक उठा है। फूल इतने बड़े हैं कि आपकी हथेली में मन समाएं। वे बड़ी शान से पौधों पर झूम रहे हैं और खिलने का आनंद ले रहे हैं। आँखें, उनके सौन्दर्य के पीने में लगे हैं। वे वहां से हटने का नाम नहीं ले लेती। यह अनूठा सौन्दर्य मन को पार कर हृदय की गहरायी में प्रवेश करता चला गया। वस्तुतः आंखें, मन, हृदय तथा रोम-रोम उन फूलों के साथ एक रुप ही गये। मैं उन्हें देखता रहा और तब तक देखता रहा जब तक कि सूर्य काफी ऊपर नहीं आ गया।

मैने नये माली से पूछा, इस बार ये फूल इतने बड़े-बड़े कैसे हो गये? पहले तो इतने बड़े कभी नहीं थे। माली ने कहा, 'बाबू जी पौधे तो बच्चे की तरह है यदि उन्हें ठीक-ठीक खाना मिले, प्यार मोहब्बत मिले, उन्हें बीमारी से बचाया जाए तो वे बड़े-बड़े फूल धारण करेंगे ही। अत्यंत वे कमजोर हो जायेंगे और ज्यादा दिन टिक भी न सकेंगे। पिछला, माली नया-नया था। उसने पौधें को सही ढंग से छांटा नहीं, उन्हें रोग कीटानुओं से बचाया नहीं, उनकी माटी को बदलकर उन्हें खाद्य दिया नहीं और प्रेम से उनकी सार-सम्भाल नहीं की यही कारण है कि पौधे मुर्झा गये, रोग ग्रस्त हो गये और उन्होंने छोटे-छोटे गुलाब को जन्म दिया।जीवन भी तो एक ऐसा बगीचा है। उसमें भी प्रेम और आनंद के फूल ऐसे ही तो खिलते हैं। यदि मन के पौधे पर ढ़ेर सारे विचारों की शाखाए, प्रशाखाएं निकल आयीं, उन्हें राग द्वेष के कीटाणुओं ने घेर लिया, प्रेम समता था उन्हें खाद न मिला, समय-समय पर सजगता के शास्त्र द्वारा उनकी काट-छांट नहीं हुई तो मन कमजोर हो जता है। मन, प्रेम शांति का और आनंद का अनुभवन नहीं कर सकता। उसकी ताजगी, सुकुमारता, निर्मलता समाप्त हो जाती है और वह अत्यंत क्षीण हो जाता है। क्षीण मन न तो वस्तु को उसके यथार्थरूप में देख सकता है, न सुन सकता है और न ही उसका अनुभव कर सकता है।

अतः यह बहुत ज़रुरी है कि हमारा मन सदा ताजा, सुकुमार और स्वच्छ रहे। वह चारों और फैले वैचारिक प्रदूषण की स्वीकारन करे और इकसे लिए आवश्यकता है, सजगता की। यदि सफलता का प्रकाश हम में है तो हम वैचारिक प्रदूषण से मुक्त रह सकेंगे। जैसे घर के मालिक के जग रहने पर घर में चोर घुसने की हिम्मत नहीं करते। ज्यों-ज्यों यह सजगता गहन होती जाती है मन हलका और निर्दोष होता जाता है। ऐसा ही मन वर्तमान में क्षण में जीने में समर्थ हो सकता है। इस सजगता का दूसरा नही ही ध्यान है।

ध्यान वस्तुतः आपने आपको जानने और समझने की कुंजी है। वस्तुतः ध्यान के बिना जीवन अधूरा है, एकांकी, बोझिल है, यह पूरा विश्व ही उसके लिये अर्थहीन है। जिस प्रकार अधे के लियक कश्मीर की धारियाँ हैं, एकांत्री है, बोझिल है, यह पूरा विश्व ही उसके लिये अर्थहीन है। ठीक उसी प्रकार ध्यान के अभाव में हम आँखों के होते हुए भी अंधे और कानों के होते हुए भी बहरे हैं। ध्यान के आगमन के साथ ही पूरा सौंदर्य से ओत-प्रोत लगने लगता है व प्रत्येक क्षण में विशिष्ट अनूठेपन का अहसास होने लगता है। तभी हम जान पाते हैं कि प्रेम क्या है? आनंद क्या है? सौन्दर्य क्या है?

✧✧

श्रमण संघ, दिवाकर कुल के उज्जवल नक्षत्र पू. श्री पदम मुनि जी म.

- राजेश जैन

उपवन में हजारों फूल खिते हैं। सभी का रंग, रूप और सौरभ अलग-अलग होता है लेकिन जिस फूल की सुगंध सबसे अधिक लुभावनी होती है, जिसका सौन्दर्य सबसे विलक्षण होता है। दर्शकों का ध्यान उसी पर केन्द्रित होता है। लोग उसी फूल को लेने, देखने तथा घर में लगाने को लालायित रहते हैं। संसार रुपी उपवन में जिस मनुष्य में अद्भुत गुण, ज्ञान की सौरभ परोपकार का माधुर्य और शील-सदाचार संचारित होता है, उसी व्यक्ति की ओर जनता आकृष्ट होती है, उसे ही अपना शीश नवाती है। ऐसे ही अद्भुत सौरभ सुमन हैं संथारा, साधक, दिव्यात्मा महाश्रमण पूज्य गुरुदेव श्री प्रेममुनि जी म. के अंतेवासी सुशिष्या रत्न युवा मनि, ओजस्वी वक्ता परम सेवा भावी कर्मठ मुनिराज पू. श्री पदममुनि जी म.। श्रमण परम्परा के समकालीन युवा मुनियों की समुज्जवल श्रेणी के सबसे तेजस्वी मनस्वी, यशस्वी, उर्जस्वी मुनिराजों में प्रमुख स्थान रखते हैं। श्री पदम मुनि म.। अराध्य गुरुराज दिवाकर रोशन प्रेम द्वारा प्रवाहित तप,त्याग, व संयम की त्रिवेणी में गहरे पैठकर संयम का मोती चुराने वाले परमहंस मुनिवर पदम का समग्र जीवन सद्गुणों का सुविशाल पदमाकर है। इनकी पदमीय हंस दृष्टि कीचड़ से भी कमल चुन लेती है, काँटों से भी सुमन बीन लेती है। आज के घोर कलयुगीय वातावरण में भी ऐसी उत्कृष्ट संयमीय अराधना धर्म धोरी छावकों की आस्था को संभाल देती है। हर हालत में संयम के प्रति दृढ़ रहते हैं। गत महावीर जयंती पर रतलाम में बीस हजार के करीब श्रोतागण थे। समाज के भाईयों का विशेष आग्रह रहा कि आप एक महान वक्ता ही लोग आपको सुनना चाहते हैं। आप कुछ समय के लए माई का प्रयोग करत लो बाद में चाहे प्रायश्चित ले लेना। पर गुरुदेव ने मना कर दिया कि पहले संयम ज़रूरी है। दिल्ली से मेवाड़ तक के लम्बे विहारों में भूखे रहना पसंद किया पर टिफिन की गोचरी या दोषपूर्ण गोचरी लेना स्वीकार नहीं किया। संयम के प्रति हर समय सजग रहे। इसी कारण दिवाकर परिवार ही क्या सारे श्रमण संघ में महान संयमी संतों में इनकी गिनती होती है। गुरुदेव के द्वारा दिया गया सेवा, स्वाध्याय व तपस्या का मंत्र जपते रहते हैं। अपने गुरुदेव की इतनी सेवा की कि दूसरे सम्प्रदाय के संत भी इन्हें आज का नंदीसेन कहते हैं।

स्वाध्याय करने व करवाने में ही लगे रहते हैं। बत्तीस शास्त्रों का गहन अध्यमन एक बार कर चुके हैं व अब याद कर रहे हैं। प्राकृत, संस्कृत आदि का भी विशेष अध्ययन कर रहे हैं। पार्थ डी बोर्ड से विशारद की परीक्षा दे रहे हैं और तपस्या में भी हर समय रत रहते हैं हर गुरुवार को मौन उपवास के अलावा हर रोज एकासने करते हैं, उसमें भी पांचों विगयों का पूर्ण त्याग कर रखा है। एक पात्र में आहार लाते हैं व घोलकर खा लेते हैं। ऐसे त्यागी तपस्वी संयमी संत को पाकर दिवाकर परिवार गवित्तत है। मेवाड, मालवा के लोग महाराज के संयमी जीवन से बड़े प्रभावित हैं व प्रार्थना कर रहे हैं कि आप कुछ साल ईश्वर ही रहकर अपने दिवाकरीय क्षेत्रों को संभालो। ऐसे दिव्य संत का जन्म श्रावण शुक्ला दसवीं को 21 अगस्त 1976 में हरियाणा के हिसार जिलके में बड़ोदा के पास कोथकंला गांव के सुप्रसिद्ध जैन परिवार लालमन परिवार में हुआ। आपकी माता का नाम जैनमति व पिता का नाम लाला ओमप्रकाश जैन

है। जन्म से ही आपको जैनत्व के सुवास व संस्कार प्राप्त हुए। संत सेवा व समाज सेवा में आप अग्रणी रहे बाल्यकाल से ही गुरुवर प्रेम-धर्म का सान्निध्य प्राप्त हुआ। दीक्षा भावना बचपन से ही थी पर माता की आज्ञा नहीं मिली। बड़ी मुश्किल से मामाश्री के प्रयास से 2007 में आज्ञा प्रापत हुई। सवा साल वैराग्य काल में रहकर साधुओं की तरह जीवन जीया व 1 मार्च 2009 को दिल्ली रोहिणी सैक्टर-3 में रोड पर ही दीक्षा पाठ गुरुदेव ने पढ़ाया। दीक्षा के बाद बड़े शुद्ध तरीके संयम की अराधना करते हुए सेवा, स्वाधय व तपस्या में रत हैं व अपने माता-पिता कुल व गुरुदेव का नाम रोशन कर रहे हैं। ऐसे अदभुत संत पर समस्त दिवाकर परिवार व श्रमण संघ को गर्व है इनके शुभमंगलकारी भविष्य की शुभकामनाएं करते हैं। गुरुदेव का चातुर्मास चितौड जिले में म.प्र. बार्डर पर निम्बाहेडा शहर में आगम ज्ञाता उपप्रवर्तक श्री गौतम मुनि जी म. आदि ठाणे-3 के साथ बड़े आनंदोउल्लास से चल रहा है दर्शन प्रवचन आदि का लाभ लें।

✧✧

।।गुरु रुप रजत शोभाष्टकम्।।

पाप, ताप, संताप का, होता सद्यः अंत,
रूप रजत की शक्ति से, बनते सब गुणवंत।।1।।

व्यथित हृदय होते सुखी, निर्धन जन धनवंत,
निर्बल भी होते यहाँ, रजत कृपा बलवंत।।2।।

सत्य धर्म मिलता सुखद, रूप रजत वरदान,
अमृतमय वाणी अहो, उन्नति करे महान।।3।।

सकल सुमंगल साधना, अनुपम आत्म सुशक्ति,
करुणा-वरुणालय 'रजत', भरते सुखद सुभक्ति।।4।।

लोक शोकहारी गुरु, लोकमान्य शुभ संत,
प्रबल प्रवर्त्तक धर्म के, रुप रजत गुणवंत।।5।।

सत्य साधना आपकी, सेवा अतुल अनंत,
सेवा में रहते यहाँ, अगणित संत महंत।।6।।

मिटता दुःख दरिद्र का, प्राप्त करे सुख चैन,
रूप रजत के वचन से, हर्षित जैन, अजैन।।7।।

कवि, रवि के आलोक में, कविकुल की मुस्कान,
अमित कल्पना शक्ति का, कवि पाते वरदान।।8।।

स्वस्थ्य रहें मंगल करें, गुरुवर रुप अनूप,
श्रमण संघ उन्नति लहे, जय जय जय गुरु रूप।।9।। (डॉ. शंभुदयाल 'पाण्डेय, जोधपुर)

महापुरुषों के जीवन से हम भी कुछ ले सकते हैं

- पुष्पा गोखरु, भीलवाड़ा (राजस्थान)

महापुरुष काल प्रसूरा होते हैं। पू. श्री यशकंवर जी म. ऐसी दिव्य विभूति थे जो मनस्यैकं, वचस्यैकं, कर्मसंक्य एकरुपा थीं। वे स्थिरमति, युगचेता व प्रखर महातपा थीं, जो भव्य को छोड़कर दिव्य से साक्षात्कार करती थी। वे वर्तमान की ही नहीं, वरन अगले जन्म व परलोक तक की सोचती थीं। उनकी पारदर्शी विचार-धारा हमारे स्वभाव को बिना साबुन-पानी के निर्मल, निर्दोष बना देने वाली थी। 'नूरानी नज़रें सो दिलावर दरवेश' इनकी नूरानी नजरें जिस पर टिक जाती, उसे निहाल कर देतीं। यह तो हमारे सोचने की बात है कि हम किस तरह प्रेरित होकर जीवन संधान के साथ युग-संधान भी करें? पू. श्री यशकंवर जी म. जैसे बहुतापा का जीवन नवनीत की तरह स्निग्ध शीतल व निर्मल था। वे हमें 'अहमेव' के तिरस्कार व विवेक के सत्कार का एजेण्डा पकड़ाती है। विवेक आत्मा की वाणी है, अहंकार शरीर की पुकार।

कहा है- कर्मक्षयार्थ तप्यते इति तपः कर्मक्षय के लिए जो सम्यक साधन पूर्वक तथा जाता है, उसे तप कहते हैं। हम भी उनसे सीखकर अपने अन्नकोश को को आनंद कोश में बदलने के लिए कर्म को तपश्चर्या के साथ पूरा करें। शरीर, इन्द्रियां, मन आदि को तपाकर, उनके जीवन से हर महाभाग प्रेरणा लेकर अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है - घृतं में चक्षरमृतं में आसन' मेरी दृष्टि में घी की तरह स्निघता हो, वाणी में अमृत सी मिठास हो। महापुरुष अपने विचारों की सृष्टि के स्वर्गलोक में रहते है। हम भी अपने जीवन में स्वर्गीय सृष्टि की अवतारणा कर सकते हैं इस शर्त के साथ 'Heaven must be in me before i can be in heaven'.

पू. श्री यशकंवर जी म. जैसी महान आत्माएं दीपक की तरह अज्ञान के अंधकार की शल्यक्रिया कर ज्ञान का प्रकाश फैलाती है - 'ततः शक्ति प्रदीपनं दीपवत' वे तो अपनी पारलौकिक या आध्यात्मिक शक्ति से दूसरे व्यक्तियों की आंतरिक शक्ति को जगाती हैं। आत्मा का अलंकरण ही तो वास्तविक शक्ति है। हम यशकंवर जैसे पुण्यालंकृत महान आत्माओं के जीवन को 'जंगम तीर्थ' कह सकते हैं, जहां जाते ही सारे पाप धुल जाते है। वे तो अपने भीतरी प्रवाह 'Under current' से विश्व मानवता को एकसूत्र से जोड़ते हैं - वे संगठन के हामी व विघटन के आलोचक।

ज्ञानियों ने 'समता' को ही धर्म कहा है। राग-द्वेष आदि विषमताओं से परे एक मुहुर्त में समता में उपस्थित होना ही सामायक है। हम उनसे समता-भाव सीखकर जीवन को भौतिक तामसिक, द्वंद्व का अरवाड़ा बनने से रोक सकते हैं। (सात्विक बुद्धि से पूर्ण सात्विक श्रद्धा ही जीवन का लक्ष्य है) यशकंवर जी अहिंसा की जबर्दश्त पैरोकार थीं। मेवाड़ अंचल के जोगणियाँ माता के मन्दिर में होने वाली पशु-बलि को अपने प्रभाव, साहस व बोधशक्ति से बंद कराने का कार्य सम्पन्न किया। इनके इस शुचिकर्म से हम 'अहिंसा धर्म' को अपने जीवन में उतार सकते हैं, धर्म के तत्वों में सत्य भी एक सर्वमान्य पहलू है। ध्येय के प्रति दृढ़ता भी मानव जीवन का सकारात्मक पहलू है। वे जीवन के संदर्भ में शोध करने वाली चलती फिरती प्रयोगशाला थीं। उन्हें ज्ञान-विज्ञान का चल विश्वविद्यालय भी कहा जा सकता है। उनके विचारों का अनुशरण कर आदमी भ्रांतियों के उन्मूलन व सत्य सन्दर्भों की जानकारी कर सकता है। उनकी सम्प्रेषणा क्षमता किसी को भी संग्राहक के रुप में प्रस्तुत करती है। 'कीर्तियस्य स जीवति' जिनका यश विस्तीर्ण है, वहीं अमर है। धर्म की राह पर चलने वाले महापुरुष सत्य की आराधना करते है।

✧✧

ध्यान...

- दिपाली सुमतिलाल मुगदिया जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

शारीरिक लाभ :- आराम बहुत दवा है जो हर रोग के इलाज में सहायक है इसलिए ध्यान हर बीमारी मिटाने के लिए मददगार है। ध्यान के अभ्यास से अस्थमा, उच्च या निच्च रक्तचाप, लकवा इत्यादि बीमारियों में लाभ होता है। **ध्यान क्या है...?**

1. जो तुम नहीं हो उसे मिटा देना ध्यान है।
2. जो तुम हो उसे जगा देना ध्यान है।
3. जो तुम नहीं हो वह अभिनय करना मूर्छा है।
4. जो तुम हो वही बनकर जीना परम जागरण है।

जो ध्यान से संभव है।

1. ध्यान देना ध्यान नहीं है।
2. ध्यान एकाग्रता नहीं है।
3. ध्यान मनन नहीं है।
4. ध्यान विधियाँ नहीं है।
5. ध्यान हमसे अलग नहीं है।

ध्यान यह शुद्ध अध्यात्म से आया है:- ज्ञान की शुरुआत करने के लिए जो विधियाँ उन्हें ध्यान यह नाम दे सकते है। यह ध्यान स्वाध्याय के मंज़िल तक पहुंचाने के लिए एक रास्ता है। स्वाध्याय यानि स्व का ध्यान जो ध्यान का मूल लक्ष है। न की केवल एकाग्रता बढ़ाना। एकाग्रहता ध्यान की मार्ग की सीढ़ी है। ध्यान की वजह से एकाग्रहता बढ़ती है। परंतु कोई एकाग्रहता बढ़ाने के लिए केवल ध्यान ही कर रहा है। तो वह कम फायदे ले रहा है, आत्म-साक्षात्कार पाने के लिए वह एकाग्रता से ही आनंदित होने वाला है। ध्यान से इंसान की चेतना ऊपर उठती है। जिससे वह सही निर्णय लेकर दूसरों के लिए आनंद का कारण बनकर आनंदित होता है, अपने मूल स्वभाव को जानना और उसमें स्थापित होना धर्म है।

व्यवध्यान क्या है?:- ध्यान का लक्ष था स्वाध्याय तक पहुंचना परंतु हम मूल लक्षों को भूलाकर ध्यान से एकाग्रता बढ़ाने में सिद्धि प्राप्त की है। कुंडलिनी जागृत करने में ही उलझ गये हैं। व्यवध्यान यानि रुकावट, व्यवध्यान यानि व्यर्थ ध्यान। ध्यान प्रदर्शन के लिए नहीं अहंकार मिटाने के लिए है। एकाग्रता मनका व्यायाम, ध्यान और मन का आराम है। मन जब दिन भर काम करके थक जाता है तब शरीर की तरह उसे भी आराम की जरुरत होती है। लेकिन मन चुप रहता भी नहीं है, ऐसे में ध्यान सेवन तनाव रहित आराम देता है।

ध्यान की आवश्यकता:- जो ऊर्जा बाहर के जगत में खत्म हो रही है। उसका कुछ ही हिस्सा अपनों के लिए इस्तेमाल करने के लिए ध्यान आवश्यक है। मन को बाहर के विषयों से हटाना, अंदर स्थिर करना ही ध्यान है।

मन:- मन केवल विचारों का आदान-प्रदान करने का माध्यम है। मन सारे विचारों का जोड़ है। मन विचारों का थैला है। विचार ही मन है। विचार यदि दुःखद है तो मन व्याकुल लगता है, विचार यदि सुखद हैं तो मन खुश रहता है। भूतकाल और भविष्य काल के विचार मन का खाना है मन का हथियार है।

ध्यान क्यों करना चाहिए..?

1. धर्म के पथ पर चलने के लिए ध्यान करना चाहिए।

दोहा: धर्म सदृश रक्षक नहीं सखा सहायक मित।
चले धर्म के पथ पर रहे धर्म से प्रित।।

2. जीवन में कष्ट और मुश्किलों से सामना करने के लिए।

दोहा: जीवन झंझा उठे-उठे तेज तूफान।
शरण गृहण कर धर्म की धर्म बड़ा बलवान।।

क्रमश...

श्री आनंद-शिव-महेन्द्र युवा वैय्यावच्च श्रेष्ठ सेवा पुरस्कार

सन्मानीय संघपति जी/अध्यक्षजी महोदय,

सादर जय - जिनेन्द्र!

आशा है आप स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे तथा चातुर्मासिक व्यवस्थाओं की व्यस्तता के साथ-साथ व्यक्तिगत धर्माराधना में भी लीन होंगे । गौरवमयी श्रमण संघ की परम्परा जिसकी मजबूत नींव देवपुरुष आचार्य पू. श्री आत्माराम जी म. सा. के साथ उस समय के श्रमण परम्परा के कई श्रेष्ठ महापुरुषों ने रखी और जिसे हमारे सभी परम पूज्यनीय आचार्य भगवंतों ने अथक परिश्रम से सिंचा, जिसे समयानुसार, शास्त्र संगत तर्काधारित बदलावों के साथ वर्तमान आचार्य भगवन, तेजपुरुष, ध्यानयोगी, युगप्रधानाचार्य, प.पू. श्री डॉ. शिवमुनि जी म. सा. ने आनंद गुरु को अपेक्षित ऐसे स्वप्नील आयामों के साथ मूर्त रुप दिया है।

ऐसे परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपने जन्म दिवस की 75वीं वर्षगांठ पर, श्रमण संघ के उज्जवल भविष्य के लिये अपने परम शिष्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. का श्रमण संघ के भावी अनुशास्ता के रुप में चयन किया । हमारे मार्गदर्शक, पथ-प्रदर्शक सभी आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर, प्रवर्तक श्रीजी, महामंत्रीजी, मंत्रीजी, उप-प्रवर्तकजी, प्रवर्तिनीजी, उप-प्रवर्तिनीजी, सलाहकार एवं सभी चरित्रात्मा साधु-साध्वी जी, जिनका त्यागपूर्ण जीवन हमें भगवान महावीर के बताये हुए मार्ग पर चलने के लिये चिरप्रेरित करता है।

समय के बदलाव के इस मोड़ पर हमारी वास्तविक धरोहर रुपी इन सभी साधु-साध्वीयों के दैनदिन आहार-विहार आदि संयम जीवन में अनेक बाधायें आती हैं। वृहदरुप में, इन वैय्यावच्च आदि सभी सेवाओं में सहयोगी बनाना हमारा परम कर्त्तव्य है और होना भी चाहिए।

इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए इस वर्ष परम पूज्य आचार्य सम्राट भगवन् पू. श्री डॉ. शिवमुनिजी म. सा. के हीरक जन्मोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में एवं युवाप्रेरक परम पूज्य युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा. के स्वर्ण जन्मोत्सव वर्ष के पावन प्रसंग पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय युवा शाखा ने श्रीसंघ- समाज के युवाओं को प्रेरणा और प्रोत्साहन हेतु इसी वर्ष से **'श्री आनंद-शिव-महेन्द्र युवा वैय्यावच्च श्रेष्ठ सेवा पुरस्कार'** प्रदान कर गौरवान्वित करने का मानस किया है।

आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह पहल मोबाईल, व्हाट्सएप के इस युग में युवाओं को स्थानक की ओर आकर्षित करेगी और हमारी धार्मिक- सांस्कृतिक धरोहर रुपी इन सभी चरित्रात्माओं के प्रति सच्चे श्रद्धाभाव के साथ अपनी वैय्यावच्च सेवाऐं प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेगी।

अतः आप से विनम्र अनुरोध है कि आपके क्षेत्रीय संस्थानों में ऐसी सेवाऐं प्रदान करने वाले युवाओं (युवक-युवतियों) के नाम आप हमें निम्न निर्देशानुसार प्रेषित करें।

सधन्यवाद सहित,

आपका अपना

शशिकुमार (पिंटू) कर्णावट जैन

राष्ट्रीय युवाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

श्री आनंद-शिव-महेन्द्र युवा वैय्यावच्च श्रेष्ठ सेवा पुरस्कार

पुरस्कार के लिये नाम निर्देशन प्रस्ताव भेजने हेतु सभी स्थानकवासी जैन श्रावक संघों के अध्यक्ष/संघपति महोदय के लिये उपयुक्त दिशा निर्देश:-

1. प्रस्तावित पुरस्कारार्थी की आयु 50 वर्ष से अधिक न हो।
2. प्रस्तावित पुरस्कारार्थी की श्रमण संघ के प्रति सच्ची श्रद्धा व आस्था हो अपितु वैय्यावच्च सेवाओं के लिए सभी सम्प्रदायों के पू. श्री साधु-साध्वीओं के लिए सदैव तत्पर हो।
3. प्रस्तावित पुरस्कारार्थी की श्रमण संघ के साधु-साध्वीयों के आहार, विहार आदि वैय्यावच्च सेवायें उल्लेखनीय, निर्विवादित हो।
4. प्रस्ताव के साथ, संघ के लेटर-हेड पर स्थानीय संघपति/अध्यक्ष के हस्ताक्षर अनिवार्य है।
5. पुरस्कारार्थी का व्यक्तिगत पूरा परिचय पत्र एवं दो पासपोर्ट साईज फोटो संलग्नित होना चाहिए। (व्यक्तिगत परिचय पत्र के साथ, पुरस्कारार्थी ने प्रदान की हुई वैय्यावच्च सेवाओं के बारे में अल्प विवरण)
6. **पुरस्कार का स्वरुप** : रु. 31000/- की राशि, सम्मान-पत्र/ट्रॉफी।
   साथ ही पुरस्कारार्थी जिस श्रीसंघ का सदस्य है, उस श्रीसंघ के अध्यक्ष का गौरव एवं श्रीसंघ को सम्मान-पत्र जिसकी घोषणा जैन प्रकाश के अंक में, व्यक्तिगत एवं प्रदान की गयी वैय्यावच्च सेवाओं के विस्तृत परिचय के साथ प्रकाशित की जायेगी।
7. पुरस्कार प. पू. युवाचार्यश्री जी के जन्म दिन पर दिनांक 5 अक्टूबर को इंदौर (मध्य प्रदेश) में कार्यक्रम में प्रदान किया जायेगा।
8. स्थानीय श्रीसंघ पुरस्कार के लिए, अपने श्रीसंघ से एक से अधिक प्रस्ताव भेज सकते हैं।
9. पुरस्कारार्थी का चयन करने, आये प्रस्तावों में से किसी भी प्रस्ताव का चयन/चुनाव/रद्द/घोषित करने का अधिकार पुरस्कार चयन समिति के पास सुरक्षित रहेगा।
10. इस वर्ष के पुरस्कार प्रायोजक - **पी.एच. जैन परिवार, मुंबई।**
11. **पुरस्कार चयन समिति-**

श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	श्री बालचंद जी खरवड़ जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
डॉ. अशोककुमारजी पगारिया जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्णावट जैन, राष्ट्रीय युवाध्यक्ष
श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	सौ. रुचिरा जी सुराणा जैन, रा. महिला अध्यक्षा
श्री आनंदमलजी छल्लानी (तमिलनाडु प्रांतीय अध्यक्ष)	श्री पारसजी मोदी जैन, राष्ट्रीय का. सदस्य
श्री महावीरचंदजी अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष)	श्री विमलजी तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष)
श्री सुरेशचन्दजी छल्लानी जैन (कर्नाटक प्रांतीय अध्यक्ष)	श्री नेमीचंदजी धाकड़ जैन (राजस्थान प्रांतीय अध्यक्ष)
श्री अतुलजी जैन (दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष)	डॉ. गुमानसिंहजी पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल प्रांतीय अध्यक्ष)
श्री विनयजी जैन (हरियाणा प्रांतीय अध्यक्ष)	श्री सतीशजी नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र प्रांतीय अध्यक्ष)
श्री राकेशजी जैन 'लक्की' (पंजाब प्रांतीय अध्यक्ष)	श्री कांतिलालजी बोथरा जैन (मुंबई-पुणे प्रांतीय अध्यक्ष)
श्री मनमोहनजी जैन (उत्तर प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष)	श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात प्रांतीय अध्यक्ष)

समाचार - प्रकाश

शिवाचार्य समवसरण इंदौर ने तपस्या में रचा एक नया इतिहास

इंदौर (मध्य प्रदेश) : शिवाचार्य समवसरण इंदौर में वर्षावास के दौरान तपस्याओं का इतिहास रचा जा रहा है। जिसके अंतर्गत 52 उपवास - 1, 40 उपवास - 1, 36 उपवास - 1, 33 उपवास - 3, 31 उपवास - 12, 30 उपवास - 3, 21 उपवास - 1, 16 उपवास - 1, 15 उपवास - 4, 14 उपवास - 2, 13 उपवास - 1, 11 उपवास - 12, 9 उपवास - 23, अठाई - 108, कुल - 173 बड़ी तपस्याएं संपन्न अभी और भी कई बड़ी तपस्या में गतिमान है।

श्री मन्ना लाल जी गादिया, 52 उपवास, श्री सुशील जी जैन भगोता, 40 उपवास, श्रीमती सरोज जी भटेवरा 36 उपवास, श्रीमती पुष्पा रतनलाल जी पोरवाल, श्रीमती मंजुला जी आँचलिया, श्री नेमीचंद जी आँचलिया 33 उपवास, श्रीमती कांति बाई जगदीश जी पोरवाल, श्रीमती रानी जी नाहटा, श्रीमती विश्रांतीबाई धर्मचंद जी पोरवाल, श्रीमती सीमा जी चोरड़िया, श्रीमती ममता ऋषभ कुमार जी पोरवाल, श्रीमती चंदा जी मकवाना, श्रीमती विमला कमल कुमार जी पोरवाल, श्रीमती संगीता जी सेठिया, श्रीमती ममता अभिषेक जी मेहता, श्री अशोक जी बरमेचा, श्रीमती वर्षा जी पगारिया, श्रीमती अंतिमबाला अविनाश जी जैन 31 उपवास, श्रीमती पूजा जी लोढ़ा, श्रीमती उर्मिला जी भटेवरा, श्रीमती मंजू छगन जी पोरवाल 30 उपवास, श्रीमती शीतल पारस जी नाबरिया 21 उपवास, श्रीमती अंकिता जी जैन, 16 उपवास, श्रीमती सोनल गिरीश कुमार जी पोरवाल, श्रीमती निकिता अमित जी जैन, श्री पारस जी गोखरु,श्रीमती हेमा जी मोतीलाल जी जेलमी, 15 उपवास, श्रीमती मीनाक्षी जी कोचर, श्रीमती आकांशा जी संचेती 14 उपवास, नवदिक्षित श्री शौर्य मुनि जी म. सा. 13 उपवास, श्रीमती रुचिता जी छजलानी, श्री जितेंद्र जी सिंघवी, श्रीमती प्रमिला जी नवलखा, श्रीमती चमेली गगन जी पोरवाल, श्री हर्ष जी मेहता, श्रीमती पुष्पा जी गुगलिया, श्रीमती अनुराधा जी पुंगलिया, श्री कीर्ति भाई जोशी, श्रीमती सुरभि जी तातेड़, श्री सुमतिलाल जी छजलानी, श्रीमती निर्मला सत्यनारायण जी पोरवाल, श्रीमती अभिप्रिया जी गोदावत 11 उपवास, श्री गौतम जी लुणावत, सुश्री प्रियांशी विजय जी पिपलिया, श्री गौरीशंकर जी पोरवाल, श्रीमती सुशीला विमल कुमार जी पोरवाल, श्रीमती रोहिणी जी राठोड़, श्रीमती रश्मि जी चोरड़िया, श्रीमती योगिता जी पीपाड़ा, श्रीमती मीना जी चेलावत, श्रीमती मोनिका जी कवाड़, सुश्री पूजा जी कोचर, श्रीमती नमिता जी नाबरिया, श्री शशांक जी संचेती, श्रीमती प्रीति राकेश जैन, श्रीमती संतोष जी जैन, सुश्री निधि जी चौधरी, श्रीमती सीमा मुकेश जी भटेवरा, सुश्री ख्याति जी जैन, श्रीमती निशा जी नाहर, श्रीमती राजी भाई पोरवाल, श्रीमती रेखा जी मेहता, सुश्री स्नेहा सपन कुमार जी जैन, श्री अभिषेक जी छजलानी, श्रीमती शीतल जी भटेवरा 9 उपवास, प्रवचन प्रभाकर श्री शमित मुनि जी म., श्रीमती विमला राधेश्याम जी पोरवाल, सुश्री रिद्धि जी चौरड़िया, श्रीमती सुशीला जी डांगी, श्रीमती पिस्ता जी धाकड़, श्रीमती सुनंदा जी भंडारी, श्रीमती संतोष जी जैन, श्रीमती निधि निमित जी पोरवाल, श्रीमती ज्योत्स्ना जी सुराणा, श्रीमती पुष्पलता जी जैन, श्री विमल चंद जी जैन, श्रीमती रेखा जी जैन, श्रीमती रोहिणी जी राठोड़, श्रीमती अंतरबाला जी नाहर, श्रीमती सरिता जी लोढ़ा, श्रीमान सुभाष जी विनायक्या, श्री दिनेश जी कोठारी, श्री मोतीलाल जी जेलमी, श्रीमान सौरभ जी जैन, श्रीमती पुष्पालता जी ओसवाल, श्रीमती रेखा जी सांड, श्रीमती आशा जी भंडारी, श्रीमती पूर्णिमा

जी कोठारी, श्रीमती पुष्पा जी बाफना, श्रीमती प्रभा जी दलाल, श्रीमती सीमा जी गोखरु 8 उपवास सुश्री मिनी जी गोखरु, श्रीमती संगीता राजेंद्र कुमार जी जैन, श्री लेखराज जी पोरवाल, श्रीमती खुशबू संदीप जी गोखरु, श्रीमती आशा जी मेहता, श्री मणिलाल जी कटारिया, श्रीमती रश्मि जी चौरड़िया, श्रीमती किरण पंकज जी भटेवरा, श्रीमती अमिता जी तकझरिया, सुश्री संतोष जी जैन, श्रीमती कल्पना जी नांदेचा, श्रीमती राजल कामदेव जी जैन, सुश्री विशि जी मारु, श्री वीरेंद्र जी जैन, श्रीमती मंजू शरदचंद्र जी पोरवाल, सुश्री इशिका जी भंडारी, श्रीमती शीला जी नाहर, श्रीमती नेहा अंकुश जी बोहरा, श्रीमती प्रीति जी सुराना, श्री मोहित जी सेठ, श्रीमती सीमा जी लोढ़ा, सुश्री आकांक्षा जी जैन, श्री अभिषेक जी छजलानी, श्री श्रेयांश अभय कुमार जी जैन, श्री मुकेश जी भंडारी, श्री राजीव जी जैन, श्री राहुल तातेड़, श्री सज्जन सिंह जी झामड़, श्री सार्थक नितिन जी गुप्ता, श्री राकेश जी डागा, श्री डॉ. उत्तम जी जैन, श्री संतोष जी जैन, श्री सुरेंद्र जी जैन, श्री अजय जी जैन, श्री विजय जी जेलमी, श्री प्रदीप जी मरोठी, श्री आगम विजय कोठारी, श्री पंकज जी मारु, श्री शरद जी मेहता, श्री संजीव जी लोढ़ा, श्री मोतीलाल जी कोठारी, श्री गौरव जी कोठारी, श्री सुनील जी तातेड़, श्री सुरेश जी देशलहरा, श्रीमती अंजू जी कोठारी, श्रीमती रेखा जी दरड़ा, श्रीमती सीमा पंकज जी जैन, श्री धर्मचंद जी जैन, श्री आशीष महेंद्रकुमार जी लुक्कड़, श्रीमती संगीता जी भंडारी, श्रीमती सरिता संजीव जी गांधी, श्रीमती सपना जी छाजेड़, श्रीमती सीमा मनीष जी लोढ़ा, श्री अंकुश लोकेश कुमार जी पोरवाल, श्री सोहनलाल जी रांका, श्रीमती चंचल रांका, सुश्री स्नेहा सुमित जी जैन, श्रीमती हेमलता हंस कुमार जी जैन, श्रीमती सुनंदा जी भंडारी, श्रीमती डॉ उज्ज्वला जी कटारिया, श्री अनिल जी जैन, सुश्री नेहा जी जैन, सुश्री उर्शिता जी सिंघवी,सुश्री उन्नति जी जैन, श्रीमती संगीता राजेंद्र जी जैन, श्रीमती मनीषा जी कोचर, श्रीमती डॉ. सीमा जी जैन, सुश्री मनस्वी जी जैन, श्रीमती भावना जी डांगी, श्री सौरभ जी जैन, श्री मनोज जी डागलिया, श्री नरेंद्र जी दरड़ा, श्री दिनेश जी जैन, श्री डॉ धर्मचंद जी जैन, श्री कपिल जी पोकरना, श्री मनीष जी मेहता, श्री रतन लाल जी सोनी, श्री योगेंद्र जी जोशी, श्री हिमांशु जी जैन, श्री विनय जी जैन, श्री प्रवीण जी जैन, श्री सुनील जी तातेड़ 8 उपवास से सम्मान किया गया।

प्रेषक : कपिल जैन

मातृ-पितृ पूजा का प्रेरक आयोजन

कटक (ओडिसा) : पूज्या महासाध्वी इतिहास चंद्रिका डॉ. विजयश्रीजी म. 'आर्या' एवं महासाध्वी तरुणलता श्री जी के सान्निध्य में यहां मातृ-पितृ पूजा का भव्य व प्रेरक आयोजन हुआ। महासाध्वी डॉ. विजयश्री जी म. ने माता-पिता पर हृदय स्पर्शी प्रवचन करते हुए कहा कि अगर दुनिया में माँ न होती तो किसी को ममता की पहचान भी नहीं होती। देवता भी माँ के लिये तरसते हैं उन्हें सारे भौतिक सुख प्राप्त हैं किंतु उनको ममत्व देने वाली माँ प्राप्त नहीं हुई। इंसान भाग्यशाली है कि उन्हें माता-पिता मिले हैं वह भी मुफ्त में। माता-पिता के सिवाय जितने भी रिश्ते हैं उनके लिये कुछ न कुछ चुकाना पड़ता है। माता-पिता की पूजा प्रथम व सर्वोत्तम पूजा है। महासती जी के आह्वान पर कटक के सभी परिवारों ने स्थानक में सामूहिक रुप से माता-पिता रुप भगवती व भगवान के चरणनरख की चंन व कुंकुम से पूजा कर आरती की तथा माता-पिता ने अपने लाड़लों को गले लगाकर आर्शीवाद दिया। संवत्सरी के दिन बुजुर्ग माता-पिता का संघ की ओर से सम्मान किया गया।

प्रेषक : सिद्धार्थ कामदार

शिवाचार्य समवसरण में धर्म प्रभावना

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : ऐतिहासिकता के साथ-साथ रिकार्ड तोड़ उपस्थिति और श्रद्धा भावना उत्साह और उल्हास के साथ पर्युषण पूर्ण होने के बाद बाहर से आने जाने वालों का तांता लगा हुआ हैं। महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक तमिलनाडु, दिल्ली, गुजरात आदि राज्यों से श्रीसंघ के साथ बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण आचार्यश्री जी, युवाचार्यश्री जी एवम् प्रवर्तकश्री जी के दर्शनों के लाभ हेतु पधार रहे है।

2 और 3 सितम्बर को राजस्थान से 40 बस के द्वारा राजस्थान जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा गुरु दर्शनों हेतु 1632 के लगभग श्रावक-श्राविकाएं आये। जिसमें स्थानकवासी समाज की उभरती हुई प्रतिभाएं, जिसमें सगीत, डांस, पेटिंग्स और प्रश्नोत्तर आदि का कम्पिटिशन का फाईनल अभय प्रशाल में हुआ। जिसमें प्रथम द्वितीय तृतीय को पुरुस्कार भी प्रदान किये गऐ हैं। तीन सितम्बर को प्रख्यात गायक विक्की डी. पारेख जी की भक्तिमय शाम हुई। जिसमें माता-पिता, बेटी आदि पर भजन सुनकर लोग भाव विहल हो गए। दो दिवसीय राजस्थान से आएं श्रद्धालुओं की भक्ति भावना सराहनीय रही।

इस समस्त आयोजन में राजस्थान कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष श्री नेमीचंद जी धाकड़ जैन और कार्याध्यक्ष श्री अरिहंत जी सिसोदिया जैन की टीम की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

4 सितम्बर को श्वेताम्बर और दिगम्बर आचार्य का महामिलन बॉस्केटबाल कॉम्पलेक्स में हुआ। इस मिलन की घड़ी के साक्षी बनने के लिए दोनों समाज के श्रद्धालु बड़ी संख्या में उमड़ पड़े। दोनों आचार्यों के जयघोष से आयोजन स्थल गूंज उठा। दोनों संघो के कुल चालीस संतो की मौजुदगी में अहिंसा के पुजारी भगवान महावीर स्वामी की महिमा के प्रचार प्रसार एवम् सामाजिक चुनौतियों का सामना करने एवम् समाज को महावीर के संदेशों को घर-घर पहुंचाने के लिए कृत संकल्प हुए। इस मंगल अवसर पर आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म. ने कहा कि समाज भले ही अलग है, लेकिन हम दोनों ही महावीर के दूत है, महावीर की साधना, महावीर का ध्यान, सहनशीलता, करूणा अहिंसा जन-जन तक पहुंचाने के लिए संतो का एक मंच पर साथ बैठना समय की मांग है। जीवन की सफलता तभी है जब भगवान महावीर के संदेश हमारे जीवन में हो, वाणी में हो, व्यवहार में हो। वर्तमान के चुनौतीपूर्ण युग में भगवान के संदेश तो और भी प्रासंगिक हो गए है।

आचार्य विशुद्ध सागर जी ने सम्बोध्ति करते हुए कहा कि भगवान महावीर ने तो मात्र जैन धर्म का प्रतिपादन किया था। राग द्वेष के कारण हम स्थानकवासी, तेरापंथ, दिगम्बर, श्वेताम्बर हो गए। भगवान महावीर ने कोई पंथ नहीं बनाया था। जैन धर्म ने तो विश्व को गणित व्याकरण दिया है।

प्रवचन के पश्चात् दोनों आचार्यों ने अपना-अपना साहित्य भेंट किया। यह नजारा देखकर तो मेरे महावीर भी एक बार मुस्कुरायें होगें कि मेरे दूत एक मंच पर बैठकर एकता की बात करते है। श्वेताम्बर और दिगम्बर आचार्यों का यह महामिलन ऐतिहासिक रहा।

18 सितम्बर को आचार्य भगवन् का 76वाँ जन्म दिवस श्रद्धा भक्ति और उल्लास के साथ विविध आयोजन के साथ मनाया गया। श्रीसंघ पूर्ण समर्पण से इस आयोजन की तैयारियों में जुटा रहा। भारत भर से श्रद्धालुओं आकर अपनी श्रद्धा भक्ति के साथ इस दिन को समर्पण दिवस के रूप में मनाया। आचार्यश्री जी के हीरक जयंती से संबंधित इस समाचार को आगामी अंक में विस्तृत रूप से प्रकाशित किया जाएगा।

- प्रवचन प्रभाकर शमित मुनि जी म.

श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन ने महाराष्ट्र के श्रावक-श्राविकाओं के साथ इन्दौर पहुंचकर आचार्यश्री जी से आगामी चातुर्मास की विनंती प्रस्तुत की

पुणे (महाराष्ट्र) : अभय प्रसाल में चातुर्मासार्थ विराजित परम पूज्य आचार्य भगवन् पू. डॉ. शिव मुनि जी म. के समक्षा धर्मसभागार में बोलते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाश जी चोरड़िया जैन ने कहा कि इन्दौर के चातुर्मास की गूंज संपूर्ण महाराष्ट्र में हो रही है, जिसके लिए मैं लाला श्री नेमनाथ जी जैन एवं श्रीसंघ को बधाई देता हूँ, जिन्होंने इतनी सुंदर व्यवस्था आचार्यश्री जी के चातुर्मास के लिए की हुई है। आज 31 अगस्त को इन्दौर आने का मुख्य लक्ष्य यही था कि दिनांक 1 सितम्बर को मेरा जन्मदिवस, जिसके लिए मैं स्वयं आपके समक्ष उपस्थित होकर आपका आशीर्वाद ग्रहण करूं। इसके अलावा मेरी तथा पुणे वालों की यही अभिलाषा है कि आप अपना आशीर्वाद हमें प्रदान करते हुए अपना आगामी चातुर्मास महाराष्ट्र वालों को प्रदान करें। सभी महाराष्ट्रवासी आपका चातुर्मास महाराष्ट्र में हो इसके लिए सूरत चातुर्मास से ही प्रयास किए जा रहे हैं। अतः हमारी भावना है कि आप हमें अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए 2018 का चातुर्मास महाराष्ट्र में हो।

आचार्य सम्राट् पू. डॉ. शिव मुनि जी म. ने कहा कि प्रभु महावीर की आत्मदृष्टि को लेकर हम चल रहे है। हम सभी अनादिकाल से संसार सागर में भ्रमण कर रहे है, परन्तु क्या हमने सोचा कि हम आज तक मुक्त क्यों नहीं हुए हैं। अनेकों जन्म लेकर ईह लोक में भ्रमण कर रहे हैं। इस दौरान हमने पाप-पुण्य सभी कुछ कमाया हैं। आप सभी की भक्ति, आपकी श्रद्धा सराहनीय है। देश-काल-वातावरण को देखकर इस विषय में विचार किया जाएगा, हमारी भी भावना होती है कि सबकी भावनाओं का ख्याल रखा जाए। इस अवसर पर उनके साथ श्री पोपटलाल जी ओस्तवाल जैन, श्री विजयकांत जी कोठारी जैन, श्री जुगराज जी पारलेचा जैन तथा महिला मण्डल की सदस्याओं ने आचार्यश्री जी के समक्ष आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनंती प्रस्तुत की।

प्रेषक : पोपटलाल ओस्तवाल जैन

श्री भंवरलाल जी भंडारी के नेतृत्व में दक्षिण में विराजित गुरु भगवंतों के दर्शन

हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस आंध्र प्रदेश/तेलंगाना शाखा द्वारा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भंवरलाल जी भंडारी के नेतृत्व में गुरु भगवंतों के दर्शनार्थ दक्षिण भारत का दौरा किया गया। प्रतिनिधि मंडल सर्वप्रथम दक्षिण के चेन्नई के साहुकारपेट के जैन भवन में विराजित श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. सा. आदि ठाणा के दर्शन के लिए पहुंचा। इसके पश्चात् ए. एम.के.एम. में विराजित पू. श्री ज्ञान मुनि जी म. आदि ठाणा के दर्शन का लाभ लिया। इसके बाद बैंगलोर पहुंचार भीष्म पितामह पू. श्री सुमतिप्रकाश जी म., उपाध्याय प्रवर पू. श्री विशाल मुनि जी म. आदि ठाणा के दर्शन किए। प्रतिनिधि मंडल में पूर्व उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी कीमती जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री श्री भंवरलाल जी भंडारी जैन, वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री कांतिलाल जी नाहर जैन, श्री वसंतराज जी पितलिया जैन, श्री गौतमचंद जी डंक, श्री कांतिलाल जी पितलिया जैन, श्री सज्जनराज जी गांधी जैन, श्री धर्मीचंद जी भंडारी जैन, श्री विक्रम जी कीमती जैन, श्री मानक जी पोकरणा जैन, श्री भंवरलाल जी कटारिया जैन आदि शामिल थे।

प्रेषक : सज्जन गांधी जैन

चातुर्मास सूची में सुधार हेतु ...

पूज्य श्री ज्ञानकंवर जी म., पू. श्री अर्चना जी म. आदि ठाणा 3
शीतल स्वाध्याय भवन, काशीपुरी भीलवाड़ा - 311001 (राजस्थान)
अध्यक्ष : नरेन्द्र सिंह मेहता जैन, महामंत्री : ज्ञानेन्द्र सिंह चौधरी जैन : 9413824377

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ

चिंचवड, पुणे में ओम जय आनंद चेरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमैन श्री अशोकचंदजी सुराणा जैन, श्री केशरीमलजी बुरड़ जैन का स्वागत करते हुए साथ में ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. अशोककुमारजी पगारिया जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, श्री सुनीलजी चोपड़ा जैन, श्री सागरजी सांखला जैन आदि।

मानसरोवर जयपुर में उ. प्र. पू. श्री विनय मुनि जी. म. 'भीम' आदि ठाणा के सान्निध्य में पू. श्री जयमलजी म. की 312वीं जन्म जयंती के अवसर पर उपस्थित सर्वश्री अविनाशजी चोरडिया जैन, विजयकुमारजी संचेती जैन, आनंदमलजी छल्लानी जैन, सिद्धचंदजी लोढ़ा जैन, शांतिलालजी दुग्गड़ जैन आदि।

अमृतसर में पू. श्री पीयूष मुनि जी म. के दर्शनार्थ हेतु पहुंचे रा. अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, रा. प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरडिया जैन, रा. का. सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, महिला अध्यक्षा सौ. रुचिराजी सुराणा जैन, सौ. मंजुजी दर्डा जैन एवं स्थानीयजन।

चंडीगढ़ में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन को स्मृति पत्र से सम्मानित करते हुए स्थानीय संघ पदाधिकारीगण साथ में मौजूद रा. का. सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, पंजाब प्रांतीय अध्यक्ष श्री राकेशजी जैन 'लक्की' आदि ।

कसारवाढी पुणे में पू. श्री विपुलदर्शना जी म. एवं पू. श्री पावनदर्शना जी म. के दर्शन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री अशोकुमारजी पगारिया जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, श्री चंदनमलजी कनवट जैन, श्री सागरजी सांकला जैन, श्री प्रफुल्लजी कोठारी जैन, श्री नितिनजी चोपड़ा जैन, श्री प्रकाशजी बोरा जैन, श्री नेमीचंदजी सोलंकी जैन आदि।

औंध पुणे में जैन कॉन्फ्रेंस पंचम जोन महिला शाखा की ओर से दिव्यांग चिकित्सा एवं उपकरण वितरण शिविर में प्र. पू. श्री कुंदन ऋषि जी म. के सान्निध्य में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा, श्री पारसजी मोदी जैन, एडवोकेट श्री अभयजी छाजेड जैन, श्री रमनलालजी लुंकड जैन, सौ. रुचिराजी सुराणा जैन, सुनंदाजी भंसाली जैन, सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, सौ. तृप्तिजी गुगले जैन, सौ. सपनाजी जैन, सौ. कुसुमजी भंडारी जैन आदि।

वर्धमान प्रतिष्ठान शिवाजी नगर, पुणे ने साध्वी पू. श्री वैभवश्री जी म. 'आत्मा' द्वारा लिखित पुस्तक 'तत्वार्थाधिगम्' का विमोचन करते हुए सर्वश्री अविनाशजी चोरडिया जैन, अशोककुमारजी पगारिया जैन, विजयकांतजी कोठारी जैन तथा विलासजी राठौड जैन।

पिपरी चिंचवड जैन महासंघ की ओर से आयोजित सामुहिक क्षमापना कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए पू. श्री विपुल दर्शना जी म. साथ में पू. श्री काव्यदर्शना जी म., पू.श्री पावनदर्शना जी म., पू. श्री मयूर पदमाश्री जी म. एवं पू. श्री भव्यपदमाश्री जी म.।

RN[redacted]I NO. - 2123/57
Da[redacted]te of Posting 23-24/09/2017
at [redacted]odhi Road, H.O. New Delhi-110003
सि[redacted]तम्बर 2017, द्वितीय पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 20 September, 2017

मानव सेवा योजना प्रमुख आधार स्तम्भ

वरिष्ठ समाजसेवी, प्रमुख मार्गदर्शक श्री चंदनमलजी चोरड़िया जैन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

वरिष्ठ समाजसेवी, जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख मार्गदर्शक श्रीमान चंदनमलजी चोरड़िया जैन रतलाल (मध्य [redacted]देश) निवासी जीव दया प्रेमी स्व. श्री नाना लाल जी चोरड़िया जैन के पौत्र एवं सधर्मी, सहायता के अग्रणी स्व. श्री [redacted]जमल जी चोरड़िया जैन एवं स्व. सौ. टीबूबाई जी चोरड़िया जैन के पुत्र हैं। आपका जन्म 19 सितम्बर 1933 को [redacted]तलाम (मध्य प्रदेश) में हुआ। जब आप माता जी के गर्भ में थे तब आपकी माताजी स्थानकवासी समाज के महान [redacted]ाचार्य एवं वरिष्ठ संतों के दर्शन–वंदन एवं प्रवचन का लाभ लेने के लिए स्पेशल ट्रेन से अजमेर (राजस्थान) के प्रथम [redacted]ाधु सम्मेलन में गई थीं। दादा–दादी जी एवं माता–पिताजी के धार्मिक संस्कार आप में भी आये हैं।

सन् 1969 में लोहे के व्यापार के लिए रतलाम से इंदौर आए और लोहे के व्यापार को बहुत बढ़ाया। इसी के [redacted]ाथ कुछ वर्षों बाद पिथमपुर में राजरतन वायर के नाम से कारखाना चालू किया तथा उसके बाद थाईलैंड में [redacted]ारखाना चालू किया।

आपके भरे–पूरे परिवार में आपकी पत्नी सौ. शांतिदेवीजी चोरड़िया जैन सरल स्वभाव की धार्मिक महिला है। [redacted]त्री सौ. आभा–डॉ. सुरेश जी चोरड़िया जैन–पुणे, पुत्री सौ. शोभा–नरेश जी जैन–आगरा, एवं श्रीमती प्रभा गाँधी जैन [redacted]दौर हैं। आपके पुत्र श्री सुनीलजी चोरड़िया जैन उद्योगपति हैं। बहु सौ. सुनीताजी चोरड़िया जैन, पौत्र यशोवर्धन, [redacted]ौत्रबहु सौ. मोहनीजी चोरड़िया जैन एवं पौत्री सु. श्री सुभिका चोरड़िया जैन सभी धार्मिक कार्यों में श्री चंदनमल जी [redacted]ोरड़िया जैन का बहुत सहयोग करते हैं।

श्री चोरड़िया जी इंदौर में धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर बहुत कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में आप [redacted]ान योगी परम पूज्य आचार्य पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म., युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. एवं प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश [redacted]ुनि जी म. 'निर्भय' आदि ठाणा के चातुर्मास महासमिति के चेयरमैन हैं। इसके साथ आप अ. भा. श्री श्वेताम्बर जैन [redacted]हासंघ के अध्यक्ष हैं। इंदौर में आपके नेतृत्व में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव बहुत ही धूमधाम से विशाल [redacted]माने पर मनाया जाता है। इस संस्था के माध्यम से समाज के जरुरतमंद परिवारों को शिक्षा एवं बीमारियों में बड़ा [redacted]हयोग दिया जाता है। इसके साथ आप जैन श्वेताम्बर सोश्यल फेडरेशन एवं श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवसी जैन [redacted]ोसवाल संघ के संरक्षक है। महेश दृष्टिहीन कल्याण संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष होकर इस संस्था को आपने नेत्रहीन [redacted]ालिकाओं के उपयोग के लिये एक बड़ा भवन अपनी माता जी श्री सौ. टीबू बाईजी चोरड़िया जैन की स्मृति में बनाकर [redacted]दिया है। इसी तरह और भी कई संस्थाओं से जुड़कर सहयोग कर रहे हैं।

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के कई वर्षों तक उपाध्यक्ष रहे हैं। वर्ष 2010–2012 में [redacted]आप जीवन प्रकाश योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहकर इस योजना को व्यवस्थित करके करीब 1260 बच्चों को शिक्षा [redacted]सहायता एवं 50 गंभीर बीमारों को लगभग 80 लाख रुपये की सहायता पहुंचाकर जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में पहली [redacted]ार एक कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके बाद वर्ष 2012–2014 तक आप मानव सेवा योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष [redacted]हकर लगभग 500 सिलाई मशीन ज़रुरतमंद परिवारों को वितरित करके रोजगार उपलब्ध करावाया है।

वर्तमान में आप जैन कांफ्रेंस के प्रमुख मार्गदर्शक एवं विश्वस्तमंडल के ट्रस्टी हैं। जैन कॉन्फ्रेंस की प्रत्येक [redacted]तिविधियों में आपका पूरा सहयोग रहता है। श्री चंदनमलजी चोरड़िया जैन के श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर [redacted]स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की मानव सेवा योजना के प्रमुख आधार स्तम्भ बनने पर हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

[redacted]ोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष) डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री) महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) महेश डाकोलिया जैन (अध्यक्ष- मानव सेवा योजना) राजेन्द्र लोढ़ा जैन (मंत्री-मानव सेवा योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

[redacted]ी ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा [redacted]य भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित